www.thearyasamaj.org

Fortnightly per copy Rs. 12/- only

Date : 3rd April 2017

आर्य जीवन

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

अवैध बूचड़खानों को बंद करने का योगी आदित्यनाथजी का फैसला साहसिक और सराहनीय

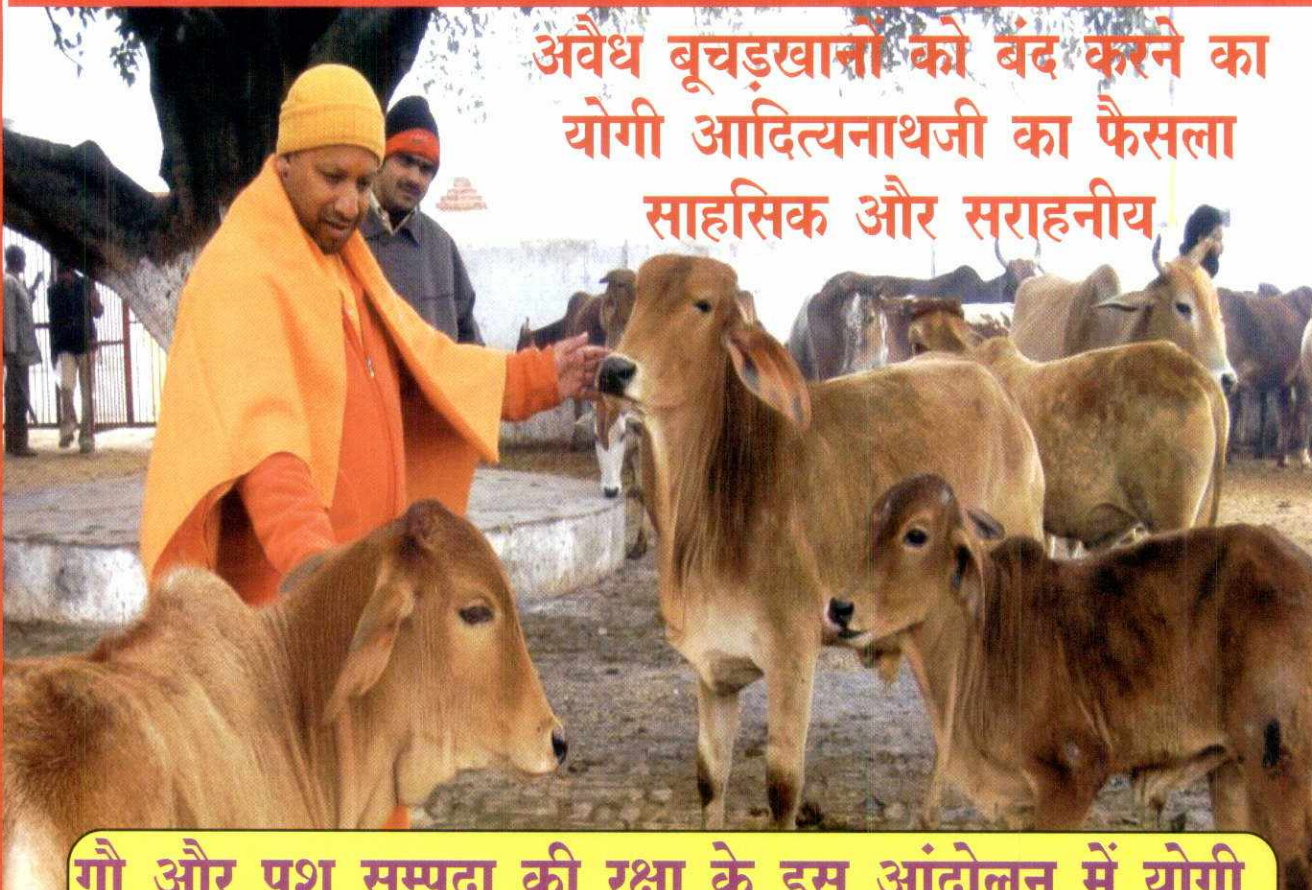

गौ और पशु सम्पदा की रक्षा के इस आंदोलन में योगी आदित्यनाथजी को आर्य समाज का पूर्ण समर्थन

नववर्ष एवं आर्य समाज स्थापना दिवस कार्यक्रम संपन्न

हैदराबाद, 29 मार्च-(मिलाप ब्यूरो) आर्य प्रतिनिधि सभा, आंध्र-प्रदेश एवं तेलंगाना के तत्वावधान में भारतीय नववर्ष एवं आर्य समाज स्थापना दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

आज यहाँ जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, पं. प्रियदत्त शास्त्री के पौरोहित्य में यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के पश्चात सभा के प्रधान ठा. लक्ष्मण सिंह की अध्यक्षता में नववर्ष एवं स्थापना दिवस पर व्याख्यान हुआ। पं. विश्वनाथ व प्रियदत्त शास्त्री ने अवसर पर भजन प्रस्तुत किए। महामंत्री प्रो. विट्ठल राव

आर्य ने समसामायिक विषयों पर अपने विचार रखे। विशेष रूप से उन्होंने उत्तर-प्रदेश के मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी द्वारा पर्यावरण की रक्षा के लिए अवैध बूचड़खानों को बंद करने के साहसिक कदम की सराहना की। कार्यक्रम में बिचवुंदा से डॉ. गंगाधर सोजे, साधना ठाकुर, अनंतय्या, रामचंद्र कुमार, वेंकट रघुरामुलू हरिकिशन वेदालंकार, अशोक कुमार श्रीवास्तव, डॉ. दिनेश सिंह आदि उपस्थित रहे। ठा. लक्ष्मण सिंह ने अध्यक्षीय संबोधन में महर्षि दयानंद से जुड़ी घटनाओं पर प्रकाश डाला।

आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद में
आर्य समाज स्थापना दिवस संपन्न

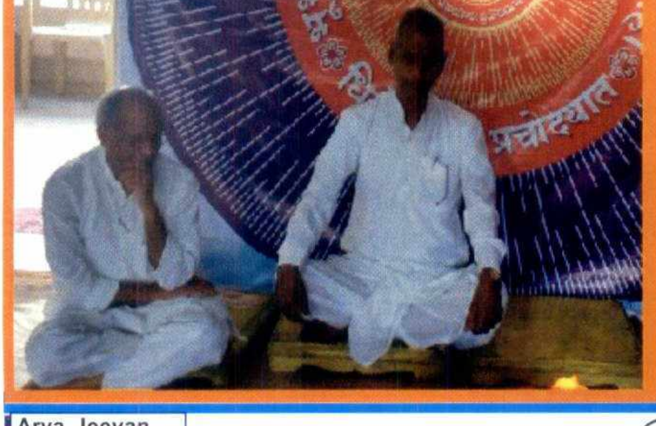

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य जीवन

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना

हैदराबाद का मुख पत्र

वर्ष : २५ अंक : ७

दयानन्दाब्द : १९४

सृष्टि संवत् : १९६०८५३११८

वि.सं. : २०७४

हेवलंबि नाम संवत्सर चैत्र मास शुक्ल पक्ष

०३-०४-२०१७

प्रधान सम्पादक

विट्ठलराव आर्य

सम्पादक मण्डल

लक्ष्मण सिंह ठाकुर

डॉ. वसुधा शास्त्री

हरिकिशन वेदालंकार

डॉ. सी.एच. चन्द्रय्या

रामचन्द्र कुमार

अशोक श्रीवास्तव

वार्षिक मूल्य रू. 250-00

कार्यालय

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना

महर्षि दयानन्द मार्ग, सुल्तान बाजार, हैदराबाद

दूरभाषः 040-24753827, 66758707, 24756983

फ्याक्सः 040-24557946, 24760030

Email :

aryapratinidhisabhaaptelangana@gmail.com

acharyavithal@gmail.com

aryavithal@yahoo.co.in.

Mobile No. : 09849560691

Editor : Vithal Rao Arya

Annual subscription: Rs.250/-

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR

प्रत्येक मनुष्य को पुरूषार्थ पर ध्यान देना चाहिए। इसी के द्वारा क्रियामाण, संचित और प्रारब्ध कर्म की स्थिति सुधरती है। इसी से मनुष्य उत्तम स्थिति को प्राप्त हो कर उन्नति के पात्र बनते है।

हैदराबाद घोषणा

राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन

हैदराबाद का घोषणा पत्र

१. आर्य समाज के विद्वानों एवं बुद्धिजीवियों का हैदराबाद में आयोजित सम्मेलन घोषित करता है कि आर्य समाज देश में पूर्ण शराबबन्दी आन्दोलन चलायेगा। इसके लिए पूरे देश में जन-जागृति अभियान चलाकर व्यापक जन-समर्थन जुटाकर केन्द्र सरकार पर दबाव बनायेगा कि वह पूर्ण शराबबन्दी के लिए राष्ट्रीय नीति घोषित करे और पूरे देश में एक साथ पूर्ण शराब बन्दी लागू करे। आर्य समाज विभिन्न प्रान्तों की सरकारों को भी पूर्ण शराबबन्दी लागू करने के लिए बाध्य करेगा।

२. निरन्तर बढ़ते जा रहे धार्मिक पाखण्ड और अन्धविश्वास के कारण धर्म परायण जनता का शोषण हो रहा है जो भारतीय संविधान की भावना के भी विपरीत है। आर्य समाज धर्म के नाम पर प्रचलित पाखण्ड एवं अन्धविश्वास के विरुद्ध प्रचण्ड अभियान चलायेगा और शास्त्रार्थ परम्परा को पुनर्जीवित करेगा।

३. नर-नारी समता आर्य समाज का महत्त्वपूर्ण विषय रहा है। अतः हर स्तर पर हो रहे नारी उत्पीड़न जैसे कन्या भ्रूण हत्या, दहेज हत्या, बलात्कार, घरेलू हिंसा तथा नारी के अपमान के विरुद्ध आर्य समाज व्यापक जन-जागृति अभियान चलायेगा।

४. अपनी उदरपूर्ति एवं जिह्वा के स्वाद के लिए गौ एवं अन्य पशु-पक्षियों की निर्मम हत्या करके मांस भक्षण से मानव समाज में बढ़ती हुई हिंसा की प्रवृत्ति के विरुद्ध आर्य समाज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अभियान चलायेगा तथा शाकाहार का व्यापक प्रचार करेगा।

५. आर्य समाज की प्रारम्भिक इकाई अर्थात् स्थानीय आर्य समाज, आर्य समाज के गुरुकुल एवं विद्यालय तथा युवा संगठनों को सक्रिय करने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, प्रान्तीय सभाओं के माध्यम से महत्त्वाकांक्षी योजना तैयार करेगी और लाखों युवाओं (युवक युवतियों) को आर्य समाज का सदस्य बनाया जायेगा। आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग एवं वार्षिकोत्सवों में उपस्थिति को प्रभावी बनाने के लिए महिलाओं एवं दलितों को विशेष प्रयत्न करके आर्य समाज में सम्मिलित किया जायेगा।

उपरोक्त हैदराबाद घोषणा पत्र को भारत एवं भारत से बाहर अन्य देशों में कार्य कर रही आर्य समाजों को अपने स्तर पर क्रियान्वित करने के लिए सक्रिय किया जायेगा। क्योंकि इस घोषणा पत्र से आर्य समाज एक बार फिर अपने तेजस्वी स्वरूप में आम आदमी तक पहुँच सकेगा।

www.thearyasamaj.org

बाल्यकाल

(आर्य समाज की स्थापना के संदर्भ में संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती का जीवन चरित्र)

भारत के पश्चिम उपकूल में गुजरात अथवा काठियावाड़ एक प्रसिद्ध उपद्वीप है। यह काठियावाड़ स्वाधीन देशीय नरपतियों के शासनाधीन एवं विशेष समृद्धशाली जनपद था। काटियावाड़ राज्य के अन्तर्गत अनेक सुबृहत् जनकोलाहल पूर्ण नगर हैं, एवं प्रत्येक नगर हो नाना प्रकार के शिल्प कार्य समन्वित मनोरम देवालयों द्वारा मण्डित भी हैं। प्रचलित हिन्दूधर्म मत समूह में वहाँ एक समय शैव मत ने अपना अप्रतिद्वन्द्वी आचिपत्य विस्तार कर रखा था। महा वैभवशाली संसार प्रसिद्ध सोमनाथ का नाम और विवरण कौन नहीं जानता ?

इस काठियावाड़ प्रदेश में मच्छू नाम की एक स्त्रोतस्विनी (नदी) के तीर पर "मोर्वी" नाम का एक मात्र अनतिबृहत् नगर है। विगत उन्नीसवीं शती के प्रथम भाग में वहाँ अम्बाशंकर नामक एक समृद्धि सम्पन्न ब्राह्मण निवास करते थे। एक ओर अम्बाशंकर जैसे सम्भ्रान्त, समृद्ध एवं माननीय राजकर्मचारी थे, दूसरी ओर वे वैसे ही धार्मिक, निष्ठावान् तथा मनस्वी पुरुष भी थे। वे अपनी नगरी के "जमादार" थे। उस देश में "जमादार" की पद-मर्यादा बंगला देशीय पुलिस के जमादार की तरह तीन नहीं होती थी। बंगदेश में डिप्टी अथवा सब-डिप्टी कलेक्टर की जैसी इज्जत होती है। "मोर्वी" राज्य में 'जमादार' की भी वैसी ही इज्जत होती थी। राजस्व वसूल करना अम्बाशंकर का प्रधान कार्य था। इस कार्य में सहायता करने के लिये उनके अधीन अनेक सिपाही, सन्तरी एवं कर्मचारी होते थे। जमादार की यह नौकरी वंशगत (वंश परम्परागत) होने के कारण यह उनकी पैतृक सम्पत्ति में गिनी जातो थी। इस अर्थकर तथा सम्मानप्रद कार्य के अतिरिक्त उनकी अपनो पर्याप्त पैतृक भू-सम्पत्ति एवं तिजारत लेन-देन का कारोबार भी था। फलतः अम्बाशंकर के परिवार में किसी तरह का अभाव रहना तो दूर रहा, वरन् वेराज-मर्यादा के साथ जीवन यात्रा का निर्वाह करते थे।

अम्बाशंकर की पत्नी हिन्दूकुल ललनाओं के यावतीय स्पपृहणीय गुणों से विभूषिता थीं। उनकी सरलता-व्यंजक सुन्दर मुख-श्री, सर्वत्र सुगठित सुकुमार अवयव और अनुपम रूपलावण्य देख लोग जितने प्रीत नहीं होते थे, उससे अधिक उनके पवित्र चरित्र गुणों से वे सन्तोष का अनुभव करते थे। विनय, सुसरलता, सहृदयता एवं सर्वप्राणियों के प्रति दयाशीलता ने उनको आदर्श रमणी के आसन पर स्थापित किया था। अम्बाशंकर के गृहस्थ राज्य में वे वस्तुतः महामहिमामयी राज्ञी थीं।

परम शौभाग्यशाली अम्बाशंकर उच्च राजपदवी एवं पर्याप्त सम्पत्ति के अधिकारी बने थे। साक्षात् लक्ष्मी स्वरूपिणी, अनिन्द्य सुन्दरी पतिपरायणा पत्नी उन्हें प्राप्त हुई थी। पार्थिव सुख-भोग की किसी भी सामग्री का अभाव भी नहीं था। साधारण मनुष्य इस प्रकार के भोगविलास के उपकरणा प्राप्त होने पर उन्हींमें उपने को आकण्ठ डुबा लेते हैं। परलोक की कथा तो सुख में भी नहीं लाते। किन्तु अम्बाशंकर साधारण मनुष्य नहीं थे। प्रयोजनातिरिक्त अतिमोहमय सुख भोग की वस्तु पाकर भी वे उनमें मग्न नहीं हुए। विषय भोग अथवा इन्द्रिय सेवा मनुष्यों का अन्तिम लक्ष्य नहीं है, यह बात उन्होंने अच्छी तरह समझ ली थी। इसलिए उन पर "भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः" कहकर साक्षेप नहीं करना पड़ता। इसलिये वे धर्म-मार्ग से स्खलित नहीं हुए। अम्बाशंकर सामवेदीय ब्राह्मण थे एवं उनके इष्टदेव थे, शिव। शैव धर्म कथित नित्य नैमित्तिक व्रत-उपवास आदि जितनी क्रियायें होती थीं, उन पर उनका अगाध विश्वास और प्रगाढ़ आस्था भी थी। वे प्राणपण फरके उनका प्रतिपालन भी करते थे। उसमें कदापि अन्यथा नहीं होता था। कोई भी सांसारिक कार्य अथवा राजकार्य कितना ही आवश्यक अथवा गुरुत्वपूर्ण क्यों न हो, उनके सन्ध्या-वन्दन आदि धर्म कार्यों में रुकावट नहीं डाल सकते थे। अम्बाशंकर अत्यन्त दृढ़चित्त, धर्मपरायण, अध्यवसायशील, कर्त्तव्यनिष्ठ पुरुष थे। वे एक बार जिस को कर्त्तव्य समझ कर मन में धारण कर लेते थे, उससे किसी भी हालत में विचलित नहीं होते थे। आचारधर्म एवं नियमादि प्रतिपालन करने में वे स्वयं किसी दिन स्वल्पमात्र भी शिथिलता प्रदर्शित नहीं करते थे। और कोई भी व्यक्ति यदि उस विषय में सामान्य उपेक्षा व त्रुटि भी करता, तो वह अमार्जनीय अपराध गिना जाता था। धर्म तथा आचारादि विषयों में ऋषितपस्वियों की तरह कठोर होने पर भी उनका हृदय कुसुमवत् कोमल रहा। ववास्तविक पक्ष में उनका मन वज्र की अपेक्षा कठोर और कुसुम से भी कोकल था। उनकी प्रजायें, और उनके अदीन कर्मचारी वृनद, प्रकृत्तिपुंज अथवा स्वजनगण, सारे के सारे उनके प्रति यथेष्ट श्रद्धा-भक्ति प्रदर्शित करते थे।

१९९१ विक्रमाब्द में (१९२४ ई०) में आचरित शिवोपासना के फलस्वरूप अम्बाशंकर ने एक पुत्ररत्न प्राप्त किया। सब सुलक्षणाक्रान्त पुत्र के प्राप्त होने पर अम्बाशंकर अत्यन्त आह्लादित हुए। उनके गृह में उत्सव को लहर प्रवाहित होने लगी। आन्दोत्फुल्ल पिता ने पुत्र का जातकर्मादि सम्पन्न कराकार नवजात शिशु का नाम "मूलशंकर" रखा। उस समय क्या अमबाशंकर को मालूम था कि यह छोटा सा शिशु समय आने पर शंकरावतार शंकराचार्य की तरह अद्वैतवेद-के ज्ञान की महोज्जवल पताका हाथ में उठाकर भारत में सर्वत्र अक्षयकीर्ति की प्रतिष्ठा करेगा ? क्या उन्हें यह मालूम था कि यह शिशु अपने पितृपितामह पूजित महादेव की पूजा का परित्याग करके सर्वव्यापी, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सच्चिदानन्दमय, सत्य, सुन्दर, शिव को उपासना में जीवन उत्सर्ग करेगा ? अघटित घटनापटीयसी भवगती भवितव्यता ने वही किया। राजपुत्र की तरह आजन्म सुख से लालित-पालित इस महासमृद्ध गृहस्थ सन्तान मूलशंकर ने ही भविष्य में सांसारिक यावतीय सुख-लालसा को पददलित कर, अति तरूण वयःक्रम से वार्धक्यशोभित वैराग्य वेश ग्रहण किया और श्रीमद्दयानन्द सरस्वती के नाम से परिचित हुए एवं उन्होंने सन्यास कर्म द्वारा सर्वांग, आच्छादित कर वेद रूपी भगवान के अजेय सेनापति के रूप में आसमुद्र हिमाचल भारत में सर्वत्र भ्रमण कर, वेद नाम से प्रचारित, अथ च वेद विरुद्ध असंख्य उपधर्मों के दृढ़ दुर्ग-समूह के अपने अलौकिक ज्ञान, कृतित्व तथा प्रतिभा बल से भूमिसात् कर सनातन वेद का विजय स्तम्भ स्थापित किया।

बालक भूलशंकर के बाल्यकाल में कोई असाधारण घटना घटी या नहीं, वह भी हमें मालूम नहीं है। सम्भवतः अन्यान्य बालकों के

जीवन की तरह मूलशंकर का बाल्यकाल भी व्यतीत हुआ था। प्रचलित नियम के अनुसार पाँच वर्ष के वयः में उनका 'हात खेड़ी'' अर्थात् अक्षर परिचय हुआ एवं आठ वर्ष के वयः में उपनयन संस्कार सम्पन्न कराया गया था। साधारण बालक की तरह उपनयन के साथ-साथ बालक को संध्योपासना सीखनी पड़ी थी।

अम्बाशंकर स्वयं शैव थे, अतएव उन्होंने गायत्रो तथा संध्यावन्दना के साथ रुद्री एवं शिवोपासना पद्धति की भी शिक्षा दी। अन्यान्य देवताओं की अपेक्षा जगदेकवन्द्य, देवाधिदेव महादेव का महत्त्व और उनकी उपासना अन्यान्य सारे देवताओं की उपासना से अधिक फलप्रद है, यह बात विशेष करके पुत्र को सिखाना नहीं भूले। प्रत्यह शिवलिंग पूजा न करके जल ग्रहण करना अनुचित है, धातु निर्मित अथवा पाषाणमय लिंग के अभाव में प्रतिदिन सद्यः प्रसूत मृण्मयलिंग की पूजा करना कर्त्तव्य है, यह बात भी पिता ने पुत्र को भली भांति समझा दी। पितृभक्त पुत्र पितृकथित नियमानुसार मृण्मय शिवलिंग की विधिवत् रचना कर पूजा करने में जुट गये।

मूलशंकर का वयः क्रम जब दस वर्ष का हुआ, तब वह पूरा शिवभक्त बन गया। प्रतिदिन शिव की पूजा किये बिना वह जल ग्रहण नहीं करता था। पर अब तक सस्वर महिम्नादि स्तोत्र पाठ धैर्य पूर्वक कथा-श्रवण एवं उपासनादि करना उसके लिये शक्य नहीं था। परन्तु परम शैव पिता इस असामर्थ्य की उपेक्षा कर पुत्र को शासन (डांट-फटकार) करने में चूकते नहीं थे। इस प्रकार तरुण वयस्क पुत्र के उपवासक्लिष्ट मलिन मुख को देखकर करुणहृदया जननी का हृदय फट जाता था। माता पुत्र के लिये पतिदेव के आगे नाना प्रकार की अनुनय विनय करके अति कठोर शैव व्रतोंपवास पालन से छुटकारा दिलाने के लिए यत्नवती होती थी। पत्नी के इस तरह के विनयगर्भ अनुरोध से प्रभावित होकर अम्बाशंकर विचलित नहीं होते थे। आस-पास के जितने शिवमन्दिर थे, अम्बाशंकर समय समय पर इन सारे देवालयों में जाकर विधिवत् देव दर्शन, पूजा, स्तव, स्तुतिपाठ, उपासनादि करते थे, और पुत्र मूलशंकर को अपने साथ ले जाना कभी भूलते नहीं थे। अनेक शैवमतावलम्बी साधु, संन्यासी अम्बाशंकर का आतिथ्य स्वीकार करते थे। अम्बाशंकर स्वयं भी पुत्र को साथ लेकर निकटस्थ, शैव साधु-संन्यासी और महन्त आदि के आश्रमों में ले जाते। अम्बाशंकर के साथ इन सारे धर्मनिष्ठ व्यक्तियों की धर्मसंक्रान्त आलोचनायें होती थीं। बालक मूलशंकर उन सारी आलोचित बातों को मन लगाकर श्रवण करते थे और स्वभावसिद्ध मेधावी होने के कारण सुनी हुई बातों को स्मरण भी रखते थे। इस तरह धीरे-धीरे वे शैवचर्म विषयक अवश्यज्ञातव्य विषयों को जान भी लेते थे। यहाँ तक कि शिव तथा शैवधर्म के माहात्म्य विषयक थोड़ी ही ज्ञातव्य बातें उनके अगोचर रही थीं। पुत्र के औदासीन्य को देखकर पहले पिता जितने खिन्न हो गये थे, अब पुत्र की इस तीक्ष्ण मेधा और ज्ञान की गहराई को देखकर उससे भी अधिक प्रसन्न हो गये। उन्होंने मन ही मन आनन्दित होकर विचार किया कि यह पुत्र मेरा नाम अमर कर सकेगा।

धीरे-धीरे मूलशंकर ने चतुर्दश वयःकाल में पदार्पण किया ! उस समय पूरी यजुर्वेद-संहिता, दूसरे तीन वेदों के थोड़े-थोड़े अंश एवं संस्कृत (व्याकरण शास्त्र) के कोई-कोई क्षुद्र अर्थात् लघु ग्रन्थ उनके कण्ठस्थ हो गये थे। वे इन शास्त्रों की बिना बाधा के जलवत् आवृत्ति कर सकते थे परन्तु जिसकी आवृत्ति वे करते थे, उसके सम्बन्ध में एक अक्षर भी समझ में आता था या नहीं, इस विषय में सन्देह ही था। सन्देह भी क्यों, अवश्य ही वे इन्हें नहीं समझते थे। इस सम्बन्ध में पिता भी पुत्रापेक्षा अधिक पण्डित नहीं थे। हमारे भारतवर्ष में इस प्रकार के वेदज्ञ ब्राह्मण अनेक मिलते हैं, जिन्होंने चारों वेद कण्ठस्थ कर रखे हैं और जबानी बोल सकते हैं (आवृत्ति कर सकते है।) इसके लिए वे कितना ही गर्व अनुभव करते हों, पर उन वचनों में क्या है और क्या नहीं है, इसकी खबर उन्हें नहीं होती।

''आवृतिस्सर्वशास्त्राणां बोधादपि गरीयसी''

अनुमान होता है कि यह वाक्य ही इस प्रकार की दुरवस्था का कारण है। अथवा यह भी एशिया महादेश की एक विशेषता है। ''वेदज्ञो'' की ही भांति ब्राह्मणेतर यवन मत में कुरानविद् ''हाफिज'' साहबों में ऐसे अनेक हैं जिन्हें चलता फिरता कुरान (ग्रंथ विशेष) मात्र कहा जा सकता है। परन्तु भक्त मुसलमान समाज में तो उनका समादर कम नहीं है। जो भी होस मूलशंकर की यह कण्ठस्थ विद्या परवर्ती समय में बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुई थी।पाठकों को उसका परिचय आगे मिलेगा।

उस बार शिवरात्रि थी। मूलशंकर शिवरात्रि का व्रत रखेंगे। अम्बाशंकर ने इतने दिनों तक उन्हें व्रत न रखने के कारण क्षमा किया है, अब नहीं करेंगे। उन्होंने ब्राह्मणी को कहा, ''मूलशंकर की वयः अभी चौदह वर्ष है, अब तो उसकी उपवासन करने की आपत्ति नहीं चलेगी।'' मूलशंकर ने पहले अस्वीकार किया था, परन्तु अन्त में पिता के बहुत अनुरोध करने पर ''व्रतकथा'' पढ़कर सम्मति दी। परन्तु माता के हृदय ने नहीं माना। माता ने कहा-''अहा ! यह बालक तो प्रातःकाल में ही भूख के मारे बैचैन हो उठता है। मैं पौ फटते हो शिव की पूजा का आयोजन कर उसके भोजन का प्रबन्ध करती हूँ। भला प्रातः काल को मेरा बच्चा कुछ भी नहीं खायेगा, दोपहर को कुछ भी खाने के नहीं मिलेगा ? सायंकाल में भी नहीं, रात को भी नहीं। मेरे नन्हें बच्चे को घूंट भर पानी भी नहीं मिलेगा। अनाहार, अनिद्रा में सारी रात काटनी पड़ेगी। बाप रे बाप ! नहीं, नहीं, इतने कष्ट में पड़कर बच्चे को कठिन रोग हो जायगा।' पर माता की बातों को कौन सुनने वाला था। अम्बाशंकर ने उसकी बातों पर ध्यान ही नहीं दिया। परन्तु प्रभुत्व तो सर्वप्रथम है। पत्नी को अम्बाशंकर ने व्याख्यान के ढंग से इसे समझा दिया। पतिपरायणा रमणी स्वभावतः निरस्त हो गई। निश्चय किया गया कि मूलशंकर इस बार शिवरात्रि का व्रत रखेंगे।

यथासम्भव आडम्बर के साथ आयोजन चलता रहा। दिन ढलने लगा। सायंकाल के पूर्व अम्बाशंकर पुत्र को साथ लेकर शिव मन्दिर की ओर रवाना हुए। मोर्वी नगर के सन्निकट एक निर्जन स्थान में देवादिदेव महादेव का एक विशाल मन्दिर था। मूलशंकर ने वहां जाकर देखा कि सदा निर्जन रहनेवाला देव मन्दिर बिलकुल जन-पूर्ण हो गया है। सबके मुंह पर उत्साह की प्रभा, सबके मुख में शिवरात्रि की व्रतकथा सुनाई देती है। न मालूम कितने आदमी भागदोड़ में व्यस्त हैं, कोई तो पूजा के उपकरण संग्रह में व्यस्त है। कोई तो हास्यपरिहास में जुटे हुए हैं, और कोइ अन्य घीर भाव से बठ कर गम्भीर स्वर से स्तोत्र पाठ कर रहे हैं। धीरे-धीरे संध्या बेला की आरती आरम्भ हुई। विविध प्रकार के वाद्यन्त्रोत्थित महान् वाद्यघोष ने दिङ् मण्डल को भर दिया। बहुतों ने उस वाद्य के साथ-साथ शिव संकीर्तन संगीत गाना आरम्भ किया। पूजा आरम्भ हुई। बाद्य की ध्वनि बन्द

हो गयी। सब लोग उत्साह के साथ पूजा के उत्सव में सम्मिलित हुए। आज की सारी रात विनिद्र हालत में व्यतीत करनी पड़ेगी। सब लोग उस उत्साह में बैठे रहे और शिव जी की माहात्म्य विषयिणी नाना प्रकार की कथायें होने लगीं।

इस तरह से उत्साह एवं हल्ले-गुल्ले में रात्रि का प्रथम भाग कट गया। सभी लोग पूर्ण जागृत अवस्था में दैठकर ''कथा'' श्रवणा एवं उसके सम्बन्ध में बहुविध आलोचनाएँ करने लगे। धीरे-धीरे रात्रि का द्वितीय प्रहर आ पहुँचा। अब तक सारे लोग सजग थे। मन्दिर के बाहर सर्वत्र निस्तब्धता थी, केघल दूर से सियार की ध्वनि सुनाई देने के अतिरिक्त और कुछ भी सुनाई नहीं देता था। मन्दिर के भीतर भी अत्यन्त निस्तब्धता थी। बहुतों का उत्साह भग्न हो गया था। केवल कुछ एक व्यक्ति स्तव-पाठ कर रहे थे, वह भी धीमे स्वर से हो रहा था। कोई गुन-गुना कर शिवकीर्तन गान गा रहा था। कोई जम्हाई लेता है, तो कोई पास बैठने वाला दूसरे को निद्रातुर देखकर मजाक कर रहा है। पुनः कुछ देर के बाद दूसरे का मजाक करने वाला जम्हाई ले रहा है और उसे इस अवस्था में देख कर दूसरा मजाक कर रहा है। इस तरह निद्रातुरता और निद्रा के साथ संग्राम चलने लगा। मूलशंकर था तो बालक ही किन्तु उसका धर्मविषयक ज्ञान तथा विश्वास अतिशय प्रबल था। आज रात्रि को सोना मना है, क्योंकि सोने से इतने कष्ट द्वारा किये व्रत बेकार हो जायेंगे, अतः वे अवश्य ही नहीं सोयेंगे। अबतक उन्होंने धोका देना, डुबकी लगाकर पानी पीना सीखा ही नहीं है। उनमें कपट ने प्रवेश नहीं किया है। अस्तु, धीरे-धीरे रात्रि का द्वितीय प्रहर भी बीत गया। तीसरा प्रहर अभी आया ही हीं था, इतने में उन्होंने देखा प्रायः सभी भक्त नींद के वश में होकर एक दूसरे के शरीर पर आश्रय लिये सो रहे हैं। इतना ही नहीं, उनके दुर्घर्ष पिता भी गहरी नींद सो गये हैं। बालक अवाक् हो गया। शिव के प्रति उनके भक्तों की ऐसी भक्ति ? भक्तों के सामने शिव की मूर्ति विराजमान और भक्त उनके आदेश को अमान्य करते हैं ? यह देख कर मूलशंकर ने प्रतिज्ञा की, भले ही और सब सो जायें, पर वे स्वयं महादेव के आदेश को अग्राह्य नहीं करेंगे। कदाचित् उनका व्रत भंग नहीं हो जाय, इस भय से भीत होकर उन्होंने शीतल जल से मुख धो डाला। अच्छी तरह से दोनों आंखों को धो लिया और इसके बाद स्थिर होकर आसन जमा लिया। अब एकाग्र चित्त से वे भक्तों के एताद्दश व्यवहार पर विचार करने लगे। प्रबल प्रतापशाली 'जमादार' को सोते हुए देख, सारे के सारे लोग, यहाँ तक कि मन्दिर के पुरोहित, परिचर्याकारी, परिचारक-गण लम्बे पड़कर सुगम्भीर आवाज के साथ नासिका ध्वनि करने लगे। उस प्राचोनविशाल मन्दिर में अकेले चौदह वर्षीय बालक मूलशंकर के अतिरिक्त एक भी व्यक्ति जाग्रत नहीं है। सभी भक्तवृन्द निद्रा देवी की सुकोमल गोद में शयन कर, प्रगाढ़ सुषुप्ति का सुख अनुभव करने लगे थे। उन सबके आगे शिव, शिवरात्रि- सब के सब लुप्त हो गये। निस्तब्धता निर्भीक होकर अपना आधिपत्य फैलाने लगी। मन्दिर के कपट-धर्म-ध्वजाधारी पुरोहितों में से कोई तो स्वप्न के आवेश में आकर प्रचण्ड धार्मिक अम्बाशंकर की कोपप्रज्ज्वलित मूर्ति देखकर चौंक उठता था। पुनः आँखें खोलकर उस भयंकर जमादार को गहरी नींद में देख कर वह पुनः सोने लग जाता था। उस विशाल जन समुदाय में मूलशंकर एकाकी (अकेले) जागृत अवस्था में बैठकर, पता नहीं क्या-क्या विचार करने लगे थे ?

कुछ समय इस प्रकार व्यतीत हुआ। अचानक उनकी दृष्टि उस पाषाणमयी देव मूर्ति पर जा पड़ी। उनकी विचारशृंखला टूट गई, और वे चोंक उठे। वे अनिमेष दृष्टि से देखने लगे। सम्मुख भाग मे अत्युज्ज्वल दीपालोक, स्वयं भी सम्पूर्ण जाग्रत, किसी प्रकार की भूल होने की सम्भावना नहीं है। सचमुच हो तो एक प्रचण्ड भूषकृप्रवर शिवमूर्ति के पीछे से निकल कर मूर्ति के ऊपर से उसके अंग-प्रत्यंगादि का अतिक्रमण कर सामने आया और नैवेद्य आदि फल-मूल, जो भी पूजा के उपकरण थे, उन्हें स्वच्छन्द होकर खाने लगता है। पुनः शिव के ऊपर होकर भाग जाता है, फिर लौट कर खाने भी लगता है। इसी तरह एक बार, दो बार, तीन बार ही नहीं, बारम्बार यह भूषक निर्भय होकर गमनागमन कर रहा है। मूलशंकर का कौतुहल जाग उठा। धीरे-धीरे अनेक गम्भोर भावनाएं उनके मन में उदय होने लगीं। वे मन ही मन विचारने लगे पुराणों में जिनकी महिमा का पाठ करता हूँ, 'कथा' के समय जिनकी महिमा सुना करता हैं, क्या यह वही देवादिदेव महादेव हैं ? मैंने सुना है वे पंचानन हैं, दशबाहु, शूल डमरूधारी हैं, कैलाशवासी, समस्त देवताओं के स्वामी हैं। तुष्टि पर वे वरदान देते हैं, और रूठने पर अभिशाप दे सकते हैं। वे ही इस जगत् का प्रलय करते हैं। क्या यह पाषाण मूर्ति वही हैं ? मैं तो देख रहा हूँ, यह देवता तो अपनी देह से इस मूषक को भी हटाने में समर्थ नहीं है।

इस प्रकार की चिन्ता में मूलशंकर का बहुत समय कट गया। अपने भावी जीवन में उन्होंने अपनी जन्मभूमि भारतवर्ष में जिस घोर धार्मिक आन्दोलन द्वारा सारे देश को आन्दोलित और आश्चर्य चकित कर दिया, आज की रात्रि की यह भावना उस महा-आन्दोलन का ही बीज थी।

वृक्ष से भूमि पर फल का पतन होता है। लैकड़ों मनुष्य यह प्रत्यक्ष देखते हैं, परन्तु फल वृक्ष से विच्छिन्न होकर ऊपर की ओर अथवा अन्य दिशा में क्यों नहीं गया, अथवा जहां का फल वहीं न रह कर नीचे क्यों जा गिरा ? इस पर कितने व्यक्तियों ने विचार किया है ? वैज्ञानिक न्यूटन ने इस पर विचार किया और उस विचार का उपहार था मध्याकर्षण नियम () का आविष्कार। शत सहस्त्र नर-नारी वर्षों से माध महीने की (चान्द्र) कृष्ण त्रयोदशी तिथि पर शिवरात्रि का व्रत रख कर, सारी रात विनिद्र रह, उपवास आदि किये जाते हैं किन्तु उस चिर आराध्य अभीष्ट देवता का किसने दर्शन किया है ? अथवा किस उपवास करने वाले को उपवास का उपहार (फल) मिला है। अधिक तो क्या, किसने उसके लिये यत्न किया है ? सभी लोग गतानुगतिक की तरह, भेड़ों की चाल चलते हैं। विचार करते हैं, करना पड़ता है इसलिये करता हूँ। बाप दादों ने किया है और सब करते चले आये हैं इसलिये, व्रत, उपवास, पूजा-पाठ का अनुष्ठान करना है, यह छोड़ कर और क्या है ?

आज उसी सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान् जगत्पालक परमदयालु, सत्य, सुन्दर शिवको कातर हृदय, अकपट, बालक की जिज्ञासा का उत्तर देना ही पड़ा। उत्तर दिये बिना वह रह न सका। ''मूलशंकर, तुम जिसे ढूंढ रहे हो, तुम्हें वह मिलेगा, कातर मत होना। पर वत्स! उसी परम ज्ञान का ज्ञानी बन कर भारतवर्ष के सोहमुग्ध, पथभ्रष्ट नर-नारियों को उसी उद्दीपनामय, अमृतमय मन्त्रों द्वारा उद्बोधित करके उनके भीतर नव-जीवन का संचार करो। मानव सृष्ट देवता पूजन से उनको

www.thearyasamaj.org

विमुख कर उनका उद्धार करो और उन्हें उसी एक, अद्वितीय, जगत् स्त्रष्टा, परम पिता की उपासना शिखाओ ।'' बालक मूलशंकर ने मानो स्वप्नविष्ट की तरह, मंत्र मुग्धवत्, अर्ध चेतनावस्था में स्व-हृदय के गम्भीरतम प्रदेश में इस महावाक्य का अनुभव किया । भविष्य जीवन में यह महावाक्य सार्थक होकर रहेगा, यह आशा उनके मन में प्रतिभात होने लगी ।

परलोकगत सुविख्यात विचारपति मि० महमद के स्वनाम धन्य पिता स्वर्गीय महात्मा सर सैयद अहमद ने जब प्रथम यह घटना सुनी तब उन्होंने देर तक विचार करने के बाद कहा था कि वास्तव में यह घटना दैवादेश सी मालूम पड़ती है । दैवादेश के बल के बिना और किसके बल से यह बालक सारे सुख भोग की आशा का विसर्जन कर सुकठोर वैराग्य का आलिंगन कर, सदा से चली आई हुई मूर्तिपूजा के विरुद्ध इस प्रकार के युद्ध की घोषणा करने के लिए और हिन्दुओं के नित्य पाठ्य वेद से ही एक ईश्वर उपासना की महिमा प्रचारित करने का साहस दिखा सकता था ?

अस्तु, बालक मूलशंकर स्वयं से ही बारम्बार पूछता था-क्या यह ही वह महादेव हैं ? इस प्रश्न को उठाकर वह उसका समाधान नहीं कर सका । प्रश्न का उत्तर न पाने से प्राणा छटपटाने लगे । अन्त में उत्तर पाने लिये सोये हुए पिता को उसने जगाया । जिस तरह अपरिपक्व निद्रा से मनुष्य को जगाने से निद्रित व्यक्ति क्रुद्ध हो उठता है । पिता भी उसी तरह क्रुद्ध हो उठे और कठोर भाव से पुत्र के इस आचरण का कारण पूछा ।

मूलशंकर ने पिता से प्रश्न किया-पिताजी ! क्या यह मूर्ति वही महादेव है ?

पिता ने विस्मित होकर विरक्त तथा क्रुद्ध भाव से कहा-इस तरह की बातें तुम क्यों पूछते हो ?

पुत्र ने धीरे से मूषक के वृत्तान्त को सुनाकर निवेदन किया 'पिताजी कथाओं में सुनते हैं कि महादेव के प्राणा हैं, वे सर्वशक्तिमान् हैं, उन्होंने अपने श्वसुर के एक आध कठोर शब्द को सहन न कर उन्हें जान से मार डाला था । आदि-देव बह्मा का मस्तक भी छेदन किया था । यदि ऐसा ही है, तो एक साधारण मूपक का अत्याचार उन्होंने क्यों सहन किया यह जो मूर्ति है, यह तो अपने हाथ पैर भी हिला नहीं सकती ? इस तरह की एक अचेतन मूर्ति की सहायता से उस सर्वशक्तिमान् जीवित देवता को प्राप्त करना असम्भव ही है। यदि ऐसा है, तो उपवास क्यों किया जाय ?

अम्बाशंकर ने पुत्र के मनोगत भाव को जान लिया पर इसके लिए कौन सा सदुत्तर दिया जाय, यह उन्हें समझ में नहीं आया । अन्त में पिता ने कहा ''मूलशंकर, इस तरह की बातें मुख में उच्चारण नहीं करनी चाहिए ? यह जो देवता देख रहे हो, वास्तव में यह सच्चा महादेव नहीं है । असली महादेव कैलास पर्वत पर है । कलियुग में मनुष्य देवताओं के दर्शन नहीं पाते हैं, इसलिए महादेव ने स्वयं कहा है कि हे मनुष्य, तूम मूर्ति बना कर उस मूर्ति की ही पूजा करो । पूजा उनकी ही होगी, और वे इससे अत्यन्त सन्तुष्ट भी होंगे ।

मूलशंकर ने पिता की एवंविध बातों पर कुछकाल के लिए निरुतर रहकर कुछ भी नहीं कहा, यह सत्य है । पर उनके मन का सन्देह नहीं हटा । उन्होंने मन में ठान लिया कि मूर्ति की पूजा पूर्णतया बेकार है, और यह भी निश्चय कर लिया कि जब तक वे असली महादेव के दर्शन अपनी आँखों से नहीं कर पायेंगे, तब तक वे शिवमूर्ति की पूजा नहीं करेंगे । शिवरात्रि का यह प्रथम व्रत ही उनके लिए अन्तिम व्रत था ।

पिता पुत्र के इस कथोपकथन के पश्चात् पुत्र ने पिता से घर लौटने की अनुमति देने की प्रार्थना की । पिता ने अनुमति नहीं दी । पिता ने किसी एक के साथ पुत्र को घर भेज दिया और साथ ही साथ उसे सतर्क भी कर दिया कि घर जाकर खाना-पीना करके व्रत-भंग मत करना । यह बात उन्होंने पुत्र से बारम्बार कह दी ।

मूलशङ्कर ने घर लौटकर देखा कि स्नेहमयीजननी उनकी राह देखती हुई जागी बैठी है । उन्होंने मां से कहा ''अम्मा ! मुझे बड़ी ही भूख लगी है, मुझे कुछ खाने को दो ।'' पुत्र के शुष्क मुख को देखकर औक्षुधा से पीड़ित उसकी प्रार्थना की मां इनसुनी कर सकती है या स्थिर रह सकती है ? मां ने उसी समय झट कमरे में जाकर नाना प्रकार के फल, मूल, मिठाई आदि लाकर पुत्र को दिये और स्नेहपूर्ण मधुर स्वर से बोली, ''बेटा, मैंने तो उसी समय कहा था कि तुम से यह कठिन उपवास नहीं किया जायेगा । तुमने मेरी इस बात को नहीं सुना, अब देख लो ! जो भी हो, यह सब भोजन खाओ । अपने पिता के पास लौट कर मत जाना, बेटा-सो जाओ'' ।

मलशङ्कर ने आनन्द के साथ माता के आदेश का प्रतिपालन किया और अत्यन्त आग्रह के साथ, थाली भरी मिठाई आदि भर पेट खाकर जल पिया और रात्रि के अन्त में सो गया । बिस्तर पर लेटने के साथ ही इतनी गहरी नींद आयी कि दूसरे दिन नौ बजे से पहले उनकी नींद नहीं टूटी ।

अम्बाशंकर ने दूसरे दिन घर लौटकर सुना कि मूलशंकर ने उनकी बातों को ठुकरा कर शिवरात्रिका व्रत भंग किया है । अम्बाशंकर के क्रोध और विरक्ति की सीमा नहीं थी । व्रत भंग करने के लिए उन्होंने पुत्र को शासन (डांटा) किया । निर्भीक पुत्र ने प्सन्नता के साथ उत्तर दिया 'जब मन्दिर की मूर्ति असली 'महादेव' नहीं हैं तब मैं उसके प्रति सम्मान दिखाने के लिये बाध्य नहीं हूँ । 'सुचतुर पिता ने इस विषय को लेकर अधिक वादानुवाद करना अनावश्यक समझ कर और भविष्य में पुत्र के मन को समझा-बुझाबर रास्ते पर लाने की अभिलाषा मन में रख वाद-विद से अपने को दूर रक्खा ।

यह बात आगे नहीं चल पाई । अम्बाशंकर ने भविष्य में शिव की पूजा नहीं की । अम्बाशङ्कर का एक छोटा सहोदर भाई था । वह अपने भतीजे को पुत्र से अधिक स्नेह किया करता था । मूलशङ्कर ने उन चाचा की शरण ली । चाचा ने बड़े भाई को समझा बुझा कर कहा कि मूलशङ्कर जैसा मेधावी छात्र है और पढ़ाई के प्रति इनकी जैसी लगन और अनुराग है, भविष्य में ये अपने कुल को रोशन करेंगे, इसमें कोई सन्देह नहीं । इसलिए अभी पूजा-पाठ, उपासना आदि पर यदि आप इन्हें नियुक्त करगे तो इनकी पढ़ाई की बड़ी हानि होगी । अभी इनको पढ़ना-लिखना सीखने दीजिए । पीछे इस विषय में ज्ञान प्राप्त कर लेंगे, तब ये अपने आप धर्म के प्रति आस्थावान् हो जायेंगे । बुद्धिमान् अम्बाशंकर सब कुछ समझ गये और उन्होंने दूसरा उपाय न देखकर भाई के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया । अब मूलशंकर वास्तविक रूप में स्वाधीन होकर एकनिष्ठवत् पाठाभ्यास में जुट गये । मूलशंकर ने उपयुक्त गुरु के पास निघण्टु, निरुक्त, पूर्व भीमांसा तथा कर्मकाण्ड के ग्रन्थादि का अध्ययन करना शुरू कर दिया । अध्ययन में उनके प्रयास की सीमा नहीं थी । उनकी असाधारण मेधा और प्रतिभा देखकर गुरु मुग्ध और आश्चर्यचकित हो गये । मूलशंकर स्वगृह में रहकर परमसुख के साथ विद्याभ्यास करने लगे ।

'वेद ही अपौरुषेय एवं सच्चा विश्व धर्म ग्रन्थ'

मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

यह सर्वमान्य तथ्य है कि चार वेद, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेदख् ही संसार के सबसे प्राचीन धर्म ग्रन्थ वा पुस्तकें हैं। वेद ही संसार के प्रमुख व सत्य ध् ार्म ग्रन्थ हैं, इसकी एक कसौटी यह है कि वेद में ईश्वर को अनेक गुणों एवं विशेषणों सहित सच्चिदानन्द, सर्वज्ञ, अनादि, नित्य, निराकार और सर्वव्यापक बताया गया है। संसार में जितने मत, पन्थ, सम्प्रदाय आदि प्रचलित हैं वह सब प्रायः ईश्वर को एकदेशी, स्थान विशेष पर रहने वाला ही स्वीकार करते हैं जबकि वैदिक ध् ार्म उनसे करोड़ों व अरबों वर्ष पूर्व उत्पन्न होने पर भी ईश्वर को निराकार एवं सर्वव्यापक मानते हैं। वेद में न तो अवतारवाद है और न किसी के ईश्वर पुत्र व सन्देश वाहक होने का सिद्धान्त। आज का युग ज्ञान विज्ञान का युग है। यह समस्त संसार वा ब्रह्माण्ड ईश्वर की रचना है। इस संसार की रचना किसी एकदेशी सत्ता से हुई कदापि नहीं हो सकती। इसे तो कोई निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, अजन्मा, सर्वव्यापक व सर्वान्तर्यामी सत्ता ही बना सकती है। आज ब्रह्माण्ड का जितना विस्तृत ज्ञान है उतना आज से हजार या दो-तीन हजार वर्ष पूर्व नहीं था। तब किसी को यह पता भी नहीं था कि इस ब्रह्माण्ड में अनन्त सूर्य, अनन्त पृथिव्यां व सौर मण्डल हैं जिनका परिमाण हर प्रकार से अनन्त है। वेदों में इसका ऐसा ही वर्णन है जबकि अन्य किसी धर्म व पंथ के धर्मग्रन्थ में वेदों के समान सत्य व यथार्थ वर्णन नहीं है। इसी कारण वेद पूर्ण सत्य ग्रन्थ हैं और ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध होते हैं क्योंकि किसी मनुष्य या मनुष्य समुदाय की यह क्षमता नहीं कि वह संसार की समस्त सत्य विद्याओं का एक ग्रन्थ बना सके। वेद और ईश्वर विषयक सत्य व यथार्थ ज्ञान के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का सत्यार्थ प्रकाश व अन्य अनेक ग्रन्थ मार्गदर्शक हैं जिनका अध् ययन कर एक साधारण व्यक्ति भी सृष्टि के यथार्थ रहस्यों को जान सकता है। अन्य किसी ग्रन्थ वह ज्ञान प्राप्त नहीं होता जो कि सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ व अन्य ऋषि ग्रन्थों से होता है।

वेदों में न केवल एक ईश्वर जो कि निराकार व सर्वव्यापक है, शरीर व नस नाड़ी के बन्धन से रहित है, ऐसे स्वरूप वाले ईश्वर का निश्चयात्मक वर्णन है। वेद जैसा ईश्वर व सृष्टि के रहस्यों का वर्णन संसार के किसी मत-पन्थ के ग्रन्थ में उपलब्ध नहीं है। अतः वेद अपौरुषेय ग्रन्थ सिद्ध हैं। न केवल ईश्वर का सत्य स्वरूप ही वेदों में वर्णित है अपितु जीवात्मा और सृष्टि का सत्यस्वरूप भी वेद व उनके व्याख्याग्रन्थों में वर्णित है। वेदों की सच्ची व मोक्ष लाभ कराने वाली ईश्वर की उपासना का ज्ञान व विज्ञान भी वेदों से ही प्राप्त होता है। अतः वेद संसार के सभी मनुष्यों के एकमात्र धर्म ग्रन्थ सिद्ध हैं। महाभारत काल तक वेद ही पूरी सृष्टि के सर्वमान्य धर्म ग्रन्थ रहे हैं और अनुमान से कह सकते हैं कि ज्ञान विज्ञान की वृद्धि के इस युग में आने वाले समय में वेद ही समस्त संसार के एकमात्र धर्मग्रन्थ होंगे। वेदों के वह सभी व्याख्याग्रन्थ जो पूर्णतः वेदानुकूल हैं, वही भविष्य में सर्वत्र स्वीकार्य होंगे। इसका यह प्रमाण है कि सूर्य को ग्रहण अवश्य लगता है परन्तु वह स्थाई नहीं होता। कुछ ही समय में सूर्य ग्रहण समाप्त हो जाता है। इसी प्रकार वेद सूर्य पर महाभारत काल व उसके बाद से कुछ समय के लिये जो ग्रहण लगा है वह आने वाले समय में छंट जायेगा और पश्चात् वेद सूर्य की भांति अपनी पूरी आभा व तेज के साथ पूरे विश्व में अपनी ज्ञान की किरणों से सुलभ होगा। संसार में एक सर्वव्यापक ईश्वर के होते हुए यह संसार अधिक समय तक अज्ञानी व अविद्याग्रस्त नहीं रह सकता। रात्रि की समाप्ती होती है और उसके बाद प्रातः अवश्य आती है। वर्तमान अध् ारात्रि का काल भी शीघ्र ही अवश्य समाप्त होगा, ऐसी आशा सभी आस्तिक बन्धुओं को रखनी चाहिये।

-मनमोहन कुमार आर्य
पताः १६६ चुक्खूवाला-२
देहरादून-२४८००१
फोनः०६४१२६८५१२१

www.thearyasamaj.org

दो वेद-मंत्र युवाओं के लिये

-अभिमन्यु कुमार खुल्लर

१. ओ३म । विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।
यद् भद्रं तन्न आसुव ।
२. ओ३म । भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुवरिण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ।

प्रथम मंत्र महर्षि का सर्वाधिक प्रिय मंत्र है । वेद भाष्य में अनेक बार इस मंत्र का उल्लेख किया है । दूसरे मंत्र को चारों वेद के बीस हजार से भी अधिक मंत्रों में पुमुख स्थांन दिया जाता है । इसे गायत्री मंत्र, गुरुमंत्र और महामंत्र भी कहा जाता है ।

यह लेख न तो विद्वानों को और न ही वृद्धजन को दृष्टिगत रखकर लिखा गया है । प्रथम मंत्र में आए 'दुरितानि' शब्द का अर्य महर्षि दयानंद ने दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःख बताया चाहिये । वृद्धावस्था में इनके दूर करने की प्रार्थना कोई अर्य नहीं रखती । दुःख से मुक्ति की प्रार्थना किसी भी आयु में की जा सकती है । दूसरे मंत्र में बताया गया है कि कौन इन दुरितों को दूर करने की सामयर्य रखता है ? वह कौन है और उसकी सामर्थ्य कैसी है ?

प्रथम मंत्र का सरल भाषा में अर्थ है- हे देव ! हे सविता ! आप हमारे दुरिता- दुर्गुणों, दुर्व्यसनों और दुःखों को दूर कीजिये और जो भी अच्छे गुण, कर्म और स्वभाव है, उन्हें प्राप्त कराईये ।

दूसरे मंत्र का अर्थ है - हे प्रामस्वरूप, दुःखहर्ता और व्यापक आनंद के देने वाले प्रभु ! आप सर्वज्ञ और सकल जगत के उत्पादक हैं । हम आपके उस पूजनीय पाप विनाशक तेज (भर्ग) का ध्यान करते हैं, जो हमारी बुद्धियों को प्रकाशित करता है । हे पिता ! आपसे हमारी बुद्धि कदापि विमुख न हो । आप हमारी बुद्धियों को सदैव सत्कर्मों में प्रेरित करें, ऐसी प्रार्थना है ।

महर्षि दयानंद गायत्री मंत्र का प्रतिदिन एक हजार बार अर्य सहित जाप करने का उपदेश करते थे । आशय यही होगा कि यह मंत्र व्यक्ति के दिलो-दिमाग पर छा जाए, स्यायी रूप से स्मृतिपटल पर अंकित हो जावे और जब भी मनुष्य दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःख में फंसे अथवा जीवन के झंझावातों में अध्ययनकाल से लेकर कार्यक्षेत्र में उतरने पर भी यदि कोई संकट आवे, तो परमात्मा उसकी रक्षा करे ।

दोनों मंत्रों में ईश्वर की पहिचान बताई गई है । ओ३म उसका निज नाम है । इस नाम में उसका स्वरूप और उसकी तीनों शक्तियों-सृष्टि निर्माण, पालन और प्रलय का समावेश है । देव - सब सुखों का देने वाला । सविता - सब जगत का उत्पत्तिकर्ता और सब ऐश्वर्यो का दाता । भूः - सब चेतन जगत के जीवन का आधार अर्थात् प्राण । भुवः- सब दुःखों से रहित व इनसे बचाने वाला है । स्वः- सब जगत् को व्यापक होकर धारण करने वाला अर्थात् नियमों में बाँध रखने वाला । ऐसा ईश्वर ही 'वरेण्यं - वरण करने अर्थात् 'मानने' योग्य है और उसी से प्रार्थना करते हैं कि वह हमें बुरे मार्ग से छुड़ाकर सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा (प्रचोदयात्) दे ।

उपरोक्त गुणों-शक्तियों से सम्पृक्त ईश्वर ने 'आत्मा' को मानव शरीर दिया है । इस शरीर को छैः तत्वों- काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद (नशा- अहंकार) और मत्सर (ईर्ष्या-द्वेष) से संजोया है । प्रत्येक मानव में इनका भिन्न अनुपात उसके स्वतंत्र-पृथक अस्तित्व को दर्शाता है । मानवीय क्रिया को गति देने वाली शक्ति - Creative/moving force ये ही तत्व हैं । यह भी यथार्थ है कि समस्त दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःख के भी ये ही तत्व कारण हैं । इसीलिये शास्त्रकार इन्हें छैः शत्रु मानते हैं, क्योंकि ये ही तत्व उसे श्रेय मार्ग से हटाकर, प्रेय मार्ग में ही उलझाए रखते हैं । श्रेय, मार्ग आत्मा की मोक्ष प्राप्ति का मार्ग । प्रेय मार्ग सांसारिक क्रिया-कलापों में चिचरने का मार्ग ।

ईश्वर काम कैसे करता है ? - बुद्धियों - ब्रेन पॉवर -मस्तिष्क की शक्तियों को बढ़ाकर, विवेक देकर - सही गलत की पहिचान बताकर । इस विवेक को प्राप्त करके भी यदि मानव त्रुटि करता है, पाप करता है तो वह उसके मस्तिष्क में, गलत काम न करने के लिये भय-डर पैदा करता है । काम करना चाहिये या नहीं करना चाहिये की शंका पैदा करता है । यदि इन दोनों चेतावनियों की भी वह अनसुनी करता है तो निषिद्ध कर्म करने के पश्चात् दुष्परिणामस्वरूप प्राप्त लज्जा (शर्म) से भी अवगत कराता है ।

कुछ प्रमुख दुगुर्णो, दुर्व्यसनों, दुःखों का संक्षिप्त विवरण विषय को स्पष्ट करने के लिये आवश्यक है :-

भ्रंष्टाचार मानव जीवन का सर्वभक्षी दुर्गुण बन गया है । जीवन के सभी क्षेत्रों में यह घुन की तरह घुस गया है । मुख्यमंत्री, उच्चत्तम प्रशासनिक पद पर आसीन अधिकारी, सेनाधिकारी, न्यायाधीश बड़े-बड़े उद्यमी, धन्नासेठ व्यापारी इस दुर्गुण में लिप्त पाये जाने पर जेल की यातना, सामाजिक प्रतिष्ठा खोने पर लज्जित जीवन झेल चुके हैं या झेल रहे हैं ।

अभी हाल ही में दो प्रकरण सामने आये हैं । डी.जी. पद पर पदस्थ वरिष्ठतम आई.ए.एस. अधिकारी बी.के. बंसल, नौ लाख रूपये की रिश्वत लेते हुए, सी.बी.आई. द्वारा गिरफ्तार किये गये । आसन्न अपमान, मानसिक पीड़ा से बचने के लिये पहिले पत्नि और पुत्री ने आत्महत्या की । कड़ी पूछताछ के कारण, बचने की आशा न देख पिता और पुत्र ने भी आत्महत्या कर ली । दिल्ली की एक महिला सीनियर जज चार लाख की रिश्वत लेते हु रंगे हाथ पकड़ी गई ।

दुर्व्यसनों में सिरमौर हैं - शराब, मादक पदार्थ-चरस, हशीश और ड्रग्स का सेवन । उन्मुक्त कामवासना की अनाधिकृत तृप्ति व्यभिचार है । देश्यागमन पहिले से ही अस्तित्व में है और अब रात-रात भर चलने वाली रेव पार्टियों, डाँस-बारों में यही सब कुछ तो होता है । शराब और शवाब के भीषण दुष्परिणामों से बचाने के लिये परमात्मा की चेतावनियाँ भय, शंका और लज्जा ही काम कर सकती हैं । स्थाई समाधान दे सकती हैं । मानवीय दण्ड विधान विवेक जाग्रत नहीं करता और नहीं हृदय परिवर्तन करता है । फिर भी देखा यह जाता है कि इन व्यसनों में ग्रस्त अधिकांश

शेष पेज ११ पर

www.thearyasamaj.org

पं. नरेन्दर जी : संघर्ष की प्रतिमूर्ति

-आचार्य अरविन्द शास्त्री

पं. नरेन्द्रजी

पं. नरेन्द्र जी का स्मरण आते ही मेरे हृदय में उल्लास भरे उमंगो के तरंग झंकृत होने लगते हैं। कद में छोटे किन्तु धैर्य और साहस में पर्वत से भी ऊँचे व्यक्तित्व के धनी थे पण्डित जी। उनको निकट से देखने का, बात-चीत करने का और उनके क्रान्तिकारी विचारों को सुनने का सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हुआ। जिनसे मैं बहुत प्रभावति हुआ। पण्डित जी पूर्व निज़ाम स्टेट हैदराबाद मे लोकप्रिय नेता थे। यहाँ के स्वतन्त्रता समय का हर व्यक्ति उनके त्यागमय जीवन से परिचित था।

पं. जी का जन्म एक सम्पन्न कायस्थ परिवार में सन् १९०७ में पुराना शहर (शाहअलीबण्डा) हैदराबाद में श्री राम नवमी के दिन हुआ। जब सारा भारत देश अंग्रेजों के कठोर कुशासन को झेल रहा था तब हैदराबाद राज्य की स्थिति कुछ विचित्र थी। यहाँ का प्रत्यक्ष शासन एक क्रूर कट्टरपन्थी मुसलमान जिसका नाम मीर उस्मान अली खान था तो उसके ऊपर अंग्रेजों का शासन चलता था, यानी हैदराबाद की जनता एक ही समय में दोनों के दमनचक्र से पीड़ित थी। यहाँ का निज़ाम अंग्रेजों ने इशारों पर नाचने वाला कठपुतली था। इस तरह की भयंकर संकट स्थिति से हैदराबाद मे बहु-संख्यक हिन्दू स्वयं को दीन एवं असुरक्षित महसूस कर रहे थे। इस विषम स्थिति में हिन्दुओं को अपने जन्मसिद्ध अधिकार के लिए अर्थात् धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक अधिकारों को प्राप्त करने के लिए निज़ाम के विरुद्ध संघर्ष हेतु एक अत्यन्त ओजस्वी त्यागशील एवं समर्पित व्यक्तित्व के रूप में पं. नरेन्द्र जी ने नेतृत्व का बागडोर सम्भाला। आर्य समाज के सिद्धान्तों का घर-घर में प्रचार करके हिन्दुओं में आत्मसम्मान एवं सम्पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करने की ललक जगाई। इनके क्रान्तिकारी एवं ओजस्वी भाषणों को सुनकर श्रोतागण वीर रस से सराबोर होते थे। भारत के लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल थे तो हैदराबाद की जनता पं. नरेन्द्रजी को यहाँ के लौह पुरुष के रूप में मानने लगी। इनकी बढ़ती लोकप्रियता ने निज़ाम के मन में डर पैदा कर दिया। जिससे उनकी नींद हराम हो गई। संसार में देखा जाता है साहसी व्यक्ति के सामने से स्वयं मृत्यु भी भाग जाती है। जेल से रिहा होने के बाद इनके हौंसले और भी बुलन्द हो गए। अपने तेज तर्रार भाषणों के माध्यम से निज़ाम और उसके पिट्ठू बहादुरयार जंग को ललकारा एवं नवयुवकों में नईस्फूर्ति पैदा की। इस समय पण्डित जी नव युवक हृदय सम्राट् की उपाधि से प्रसिद्ध हो गए।

अब निज़ाम पण्डित जी को एक खतरनाक दुश्मन समझने लगा। फलतः सन् १९३८ में हैदराबाद मुक्ति सत्याग्रह में आर्य समाज की ओर से भाग लेने के कारण राजनैतिक बन्दी बना कर हैदराबाद का अंडमान माने जाने वाले ''मन्नानूर'' (जि. महबूबनगर) में कठोर कारावास की सजा पर तीन साल के लिए जेल भेजा गया। निज़ाम के द्वारा इन्हें राजद्रोही ठहराया गया। इनके भाषणों पर पूरी तरह प्रतिबन्ध लगाया गया। इसके बाद १९४५ में फिर १९४७ में भी बन्दी बना कर जेल भेजा गया। इस तरह पं. नरेन्द्र जी ने राष्ट्रमुक्ति रूपी यज्ञ में अपनी भरी जवानी की आहुति देदी। अन्त में १९४८ में निज़ाम के निर्मम शासन से हैदराबाद मुक्त हुआ। इसके बाद इन्हें बहुत ही गौरवपूर्ण ढंग से जेल से मुक्त किया गया।

१५ अगस्त १९४७ को भारत स्वतन्त्र हुआ। परन्तु हैदराबाद रियासत को अभी मुक्ति नहीं मिली थी। यह निज़ाम मे जंजीरों में जकड़ा हुआ था। यह पं. नरेन्द्र जी के निर्देशन में आर्य नर-नारियों के संघर्ष के फल स्वरूप १७ सितम्बर १९४८ को मुक्त होकर भारत में विलीन हुआ। ये दोनों घटनायें भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखी जाने योग्य हैं। किन्तु उस समय मे जन जीवन का हर क्षेत्र अस्त-व्यस्त था। सामान्य जनता का दुःख-दर्द वर्णन से परे था। लोग निर्धन निरक्षर दीन-हीन होकर जीवन यापन कर रहे थे। समाज की इस दयनीय स्थिति को देख कर अन्य दिग्गज नेताओं के साथ ही पं. नरेन्द्र जी का दिल सिहर उठा। वे कहाँ चुप बैठने वाले थे ? स्वराज्य को सुराज्य में परिवर्तित करने का पवित्र संकल्प मन में लेकर पुनः कार्य क्षेत्र में कूद पड़े। पूर्व निज़ामराज्य हैदराबाद स्टेट में अनेक स्थानों पर आर्य समाजों की स्थापना की गई। उनमें पाठशालाओं की व्यवस्था की गई। व्यायामशाला का प्रबन्ध किया गया। पण्डित जी स्वयं खादी उद्योग, राष्ट्रभाषा रक्षा आन्दोलन आदि अनेक कार्यक्रमों में भाग लेते रहे। इस प्रकार जनता का मनोबल बढ़ाकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का पूर्णप्रयास किया गया।

त्यागी महापुरुषों की वाणी में एक विलक्षण आकर्षण होता है, यही बात पण्डित जी में देखने के मिलती है। उनकी वाणी प्रायः शौर्यपूर्ण हुआ करती थी। १९६७ की बात है हमारे आर्य समाज ''ओमनगर'' के तत्वावधान में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी उत्सव का आयोजन किया गया, जिसमें जनता को सम्बोधित करने के लिए पं. नरेन्द्र जी आमन्त्रित थे। सभा में बाँसुरी वाले कृष्ण का सुन्दर चित्रपट रखा गया था, जिसे देख उनका प्रसन्न वदन खेद से भर गया। पण्डित जी की इस स्थिति का कारण आयोजकों को समझ में नहीं आया और वे भयभीत हो गए। जब उनका व्याख्यान देने का समय आया तो वहाँ उपस्थित हम सबको सम्बोधित करते हुए उन्होंने अपने मन की बात यूँ कही ''सम्माननीय भद्रपुरुषो ! जन्माष्टमी पर्व के दिन संसार के मनुष्यों को

आदर्श जीवन बिताने का पाठ पढ़ाने वाले श्रीकृष्णजी का स्मरण करके मैं सहसा गद्‌गद हो उठता हूँ। परन्तु आपने जिन बॉसुरी वाले कृष्ण का चित्र यहाँ रखा है उसके स्थान पर चक्रधारी कृष्ण जी का चित्र लगाए होते तो मैं बहुत खुश होता। क्यों कि राष्ट्र व समाज को नियमों में बांध कर आगे बढ़ाने के लिए बाँसुरी की अपेक्षा चक्र की अधिक आवश्यकता है। हमें इस गलत फहमी में कतई नहीं रहना चाहिए कि हमें आजादी मिल गई, हमारे सारे संकट टल गए। भोले लोगो ! आज भी इस भारतवर्ष को तहस-नहस करके मज़हब के नाम पर यहाँ की जनता को विभाजित करके आपस में लड़ाने के लिए मुसलमान और ईसाई जैसे राष्ट्रविरोधी तत्व इस देश में पनप रहे हैं। इनके षडयन्त्रों को परास्त करने के लिए कृष्ण जी का चक्र धारण करो। राष्ट्र व इनसानियत के इन दुश्मनों को बाँसुरी का प्यार भरा राग नहीं भाता। यहाँ उपस्थित हर नवयुवक को आर्य समाज में आने का निमन्त्रण देता हूँ। आओ ! हम सब उस चक्रधारी श्रीकृष्ण की रणनीति के अनुगामी बन कर इस देश से दुष्टों का सफाया कर देंगे। परमात्मा हमें ऐसी शक्ति दे।'' ऐसे थे पण्डित जी के प्रेरणात्मक उद्‌गार।

१९७५ में पं. नरेन्द्र जी सन्यासाश्रम में प्रवेश करके ''स्वामी सोमानन्द सरस्वती'' बने। यह दीक्षा समारोह केशवस्मारक विद्यालय, नारायणगुडा, हैदराबाद में एक विशाल सभा के रूप में सम्पन्न हुआ। इस भव्य सभा का अवलोकन करने का स्वर्णिम अवसर मुझे भी प्राप्त हुआ। आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान् सन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती जी महाराज ने पण्डित जी को दीक्षा दी। उस समय के सार्वदेशिक सभा प्रधान ओमप्रकाश पुरुषार्थी आदि कई गण्यमान्य विद्वज्जण सभा में उपस्थित थे। दीक्षाग्रहण कार्यक्रम के पश्चात् क्रम से वक्तागण अपनी ओजस्वी वाणी के माध्यम से मानो वेदज्ञानरूपी अमृतवर्षा कर रहे थे। विषय तुरीयाश्रम का था। मोक्षगामी के लिए एषणात्रय-(वित्तैषणा, पुत्रैषणा, लोकैषणा) को त्रिकरणों (मन-वाक्-शरीर) से त्यागने की अनिवार्यता का विषय चल रहा था। अध्यक्षीय भाषण से पूर्व पण्डित जी को अपने उद्‌गार व्यक्त करने का अवसर दिया गया। सभा में सन्नाटा छाया हुआ था। पण्डित जी ने अब स्वामी सोमानन्द के रूप में गम्भीर मुद्रा में बोलना आरम्भ किया - ''अध्यक्ष महोदय ! एवं आर्य भद्र पुरुषो ! इस सभा में इच्छाओं को पूर्ण रूप से मिटाने की बात चल रही है। किन्तु मेरे मन में एक इच्छा तीव्ररूप से आग की तरह भड़क रही है। वह यह है मैं परमात्मा से निरन्तर प्रार्थना कर रहा हूँ कि वह मुझे मुक्ति न दे, बल्कि इस भारत माता मे गर्भ में मैं बार-बार जन्म लेकर गुरुवर दयानन्द के सपनों को साकार करने के लिए, ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' वेदोक्ति को वास्तविकता में परिवर्तित करने के लिए आर्य समाजरूपी इस हवन कुण्ड में मैं एक समिधा बन कर मानव समाज को प्रकाश प्रदान करने का कार्य करता रहूँ। यही प्रभु से मेरी इच्छा है।'' पण्डित जी के इन वाक्यों ने जनता के दिलों को झकजोर दिया। श्रोतागण बहुत देर तक अपनी करतल ध्वनि से उनके उद्‌गारों को सराहते रहे।

पण्डित जी अपनी संक्षिप्त आत्मकथा ''जीवन की धूप-छॉव'' नामक पुस्तक में लिखते हैं - ''सामाजिक जीवन में उतरने से पहले मैं ने दो बातों का निश्चय कर लिया था। १) जीने के वास्तविक उद्देश्य की खोज, २) वैवाहिक जीवन में न बंधना। इन बातों के सम्बन्ध में समझबूझ कर और भविष्य में होने वाली सारी घटनाओं के सम्पूर्ण परिणामों से पूरीतरह से अवगत होने के बाद ही इस निर्णय पर पहुँचा, तो फिर मुझे दुखों, कष्टों और कठिनाइयों की कोई बाधा न थी।''

जीवन के अन्तिम श्वास तक पण्डित जी अपने इन निर्णयों पर अडिग रहे। निज़ाम के शासनकाल में तीन बार कारावास के दण्ड के समय उन्हें बुरी तरह से शारीरिक यातनायें दी गई। पुलिस द्वारा एक पैर भी तोड़ दिया गया। जीवन के अन्तिम काल में उनकी शारीरिक शक्ति क्षीण हो चुकी थी। इतना होने पर भी अपने स्वास्थ्य की परवाह न करते हुए दिन-रात आर्य समाज के संगठन एवं उन्नति के लिए हर क्षण प्रयास करते रहे। अन्त में २४ सितम्बर १९७६ को अपनी इह लीला समाप्त की।

पण्डित जी के जीवन का उल्लेख किए बिना हैदराबाद का मुक्ति आन्दोलन का इतिहास अधूरा है। इस पावन धरती के विनीलाकाश में पण्डित जी ध्रुवतारा के समान सदा प्रकाशमान होते रहेंगे।

उन्हें हमारा शत-शत वन्दन !

पेज ९ का शेश

लोग, मानवीय कमजोरियों के चलते, घुटने टेक देते हैं।

दुःख के कारम और प्रकार की सूची अंतहीन है और इनसे प्राप्त पीड़ा भी अकल्पनीय और सीमातीत है। इनमें एक प्रमुख कारण पूर्व जन्मों के संचित कुकर्म हैं।

लेख की सीमा और उद्देश्य का ध्यान रखने के कारण यदि प्राकृतिक आपदाओं से प्राप्त दुःखों एवं व्यक्तिगत शारीरिक और मानसिक रोगजनित पीड़ा का विचार करना छोड़ दें तो क्रियात्मक रूप में दुःख देने वाले और दुःख झेलने वाले दोनों ही मनुष्य हैं। पूर्व वर्णित छः में से एक अथवा अधिक शत्रुओं से ग्रसित मनुष्य ही दुःख का कारण बनता है।

दुःखो का निवारण और कामनाओं की पूर्ति ईश्वर करता है पर कब ? महर्षि दयानंद के अनुसार जब पूर्ण पुरुषार्थ - पूरी मेहनत और लगन के साथ प्रयत्न करने पर भी सफलता न मिले तब। दुःख / कष्ट / संकट निवारण का ईश्वरीय तरीका भी अद्‌भुत होता है। किसी भी रूप में अप्रत्याशित सहायता देकर, विपरीत परिस्थितियों को अनुकूल बनाकर, धैर्य से उनका सामना करने का आत्मिक बल देकर।

आज का युवा वर्ग बेरोजगारी के कारण अत्याधिक पीड़ादायक मानसिक यंत्रणा झेल रहा है। उसकी जिन्दगी 'भटकाव' की त्रासदी बन गई है। यह 'भटकाव' बड़ी आसानी से उसी शराब, ड्रग्स सेवन एवं अपराध आदि के दुर्व्यसनों में ढ़केल रहा है। ऐसी स्थिति में परिवार के अतिरिक्त उसे सच्चा मार्गदर्शक, विश्वसनीय हितैषी मित्र चाहिए जो २४ घण्टे उपलब्ध हो। इन मानदण्डो पर १०० प्रतिशत खरा उतरने वाला परमात्मी ही हो सकता है, अन्य कोई नहीं।

इसीलिये इस लेख में निराकार, सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान परमेश्वर का अत्यंत संक्षिप्त परिचय और उसकी अपार क्षमताओं से युवावर्ग का परिचय कराने का प्रयास किया है, जिससे वे उसे ही सर्वोच्च हितैषी मित्र मानकर पूर्ण आस्थावान और विश्वासी बने। मुझे बड़ी हार्दिक प्रसन्नता है कि डी.ए.वी. संस्थाएं एवं गुरुकुल इसी विचारधारा के युवावर्ग का निर्माण कर रहे हैं।

www.thearyasamaj.org

धार्मिक असहिष्णुता और सामाजिक विभाजन के खतरे

- स्वामी अग्निवेश - सामाजिक विचारक

ANIMALS ARE NOT OURS TO EAT, WEAR, EXPERIMENT ON, USE FOR ENTERTAINMENT, OR ABUSE IN ANY OTHER WAY.

Meat and the Environment
Raising animals for food requires massive amounts of land, food, energy and water and causes immense animal suffering.
According to the United Nations, a global shift toward a vegan diet is necessary to combat the worst effects of climate change.

Water Use
It takes an enormous amount of water to grow crops for animals to eat, clean filthy factory farms, and gives animals water to drink. A single cow used for milk can drink up to 50 gallons of water per day-or twice that amount in hot weather-and it takes 683 gallons of water to produce just 1 gallon of milk. It takes more than 2,400 gallons of water to produce 1 pound of beef, while producing 1 pound of tofu only requires 244 gallons of water. By going vegan, one person can save approximately 219,000 gallons of water a year.

दक्षिण की एक अभिनेत्री के भगवान अयप्पा के मंदिर में गर्भ गृह में जाने और भगवान को छू लेने से उत्पन्न हुआ विवाद अभी थमा भी नहीं था कि दक्षिण के ही राज्य केरल से एक नए विवाद की खबर आ गई है। केंद्रीय मंत्री वायलार रवि, पिछले दिनों सपरिवार गुरूवायूर के मंदिर में एक धार्मिक अनुष्ठान के लिए गए थे। उनके वापस होने के बाद मंदिर की शुद्धिकरण के लिए पूजा की गई। वह इसलिए क्योंकि वायलार रवि की पत्नी ईसाई है। यानी वायलार रवि तो मंदिर में जा सकते हैं लेकिन उनकी पत्नी और बच्चा मंदिर में नहीं जा सकते। इस तरह की अनेक परंपराएं मंदिरों में प्रवेश को लेकर आज भी प्रचलित हैं और अफसोस की बात यह है कि तमाम आधुनिक विकास के बावजूद इसमें किसी किस्म के सुधार की संभावना नहीं दिख रही है, उलटे धार्मिक असहिष्णुता बढ़ती जा रही है।

किसी को दूसरे धर्म के व्यक्ति का मंदिर में प्रवेश पसंद नहीं है, किसी को अपने धर्म के लोगों का बाल (केश) नहीं रखना पसंद नहीं है, किसी को बुरके की अनिवार्यता चाहिए। ऐसा लग रहा है, जैसे तमाम आधुनिक परंपराओं को छोड़कर हम पीछे की तरफ लौट रहे है।

दरअसल वेदों में और सम्पूर्ण वैदिक संस्कृति में पाषाण और प्रतिमा पूजन नहीं है। वेदों में कहा गया है - न तस्य प्रतिमा अस्ति, यस्य नाम महद्यशः अर्थात् ईश्वर है, सर्वव्यापक है, वह परमात्मा है, लेकिन उसकी कोई प्रतिमा नहीं है। इसका अनुसरण नहीं किया गया। मंदिरों और प्रतिमओं की स्थापना पूरे देश में हुई। मध्यकाल में जब पतन का दौर शुरू हुआ तो मंदिरों और प्रतिमाओं की स्थापना के साथ-साथ जन्मना जातिवाद, छुआछूत, दलितों के मंदिरों में प्रवेश का निषेद्ध, दलितों द्वारा वेद पाठ पर रोक आदि की सिद्धांतहीन व एक हद तक अमानवीय परंपराओं का जन्म हुआ।

यह सिर्फ गुरूवायूर या भगवान अयप्पा के मंदिर की बात नहीं है। महाराष्ट्र का राम मंदिर, राजस्थान का नाथद्वारा मंदिर इन सारी जगहों पर ऐसी या इससे मिलती-जुलती परंपराएं प्रचलित हैं। जिस समय देश में आजादी का आंदोलन चल रहा था, उसी समय समाज सुधार का एक समानांतर आंदोलन चल रहा था, उसी समय समाज सुधार का एक समानांतर आंदोलन चल रहा था, उस आंदोलन के दौरान महात्मा गाँधी ने गुरूवायूर मंदिर की मान्य परंपराओं के खिलाफ आंदोलन किया था। बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर ने महाराष्ट्र के श्रीराम मंदिर में प्रचलित प्रथाओं के खिलाफ आंदोलन छेड़ा था। नाथद्वारा मंदिर के अनेक प्रथाओं के खिलाफ मैंने खुद आंदोलन चलाया। जाहिर है इन तमाम आंदोलनों के बावजूद ढेर सारी सिद्धांतहीन बातें आज भी प्रचलित हैं और एक स्तर पर अपनी परंपराओं और प्राचीन पद्धतियों को अपनी (धर्म) अस्मिता से जोड़ कर देखा जाने लगा है, जिसमें किसी किस्म का भटकाव स्वीकार नहीं करने की मानसिकता पनप रही है। यह एक घातक प्रवृत्ति है।

केरल देश का सबसे शिक्षित राज्य है और वहां के लोग देश के विभिन्न हिस्सों में ही नहीं, बल्कि दुनिया के अनेक हिस्सों में अपने ज्ञान व कौशल से रोजगार कर रहे हैं। लेकिन वहां अनेक वाहियात किस्म की परंपराओं का प्रचलन में होना समझ से परे है। केरल के अनेक मंदिरों में यह परंपरा है कि पुरुष मंदिर में प्रवेश के समय ऊपर के वस्त्र धारण नहीं करेंगे। यानी कमर के ऊपर का हिस्सा खुला रखकर ही मंदिर में जाना है। भगवान अयप्पा के मंदिर में ११ से ५० साल की उम्र की कोई स्त्री मंदिर के गर्भगृह में नहीं जा सकती है। हालांकि इन सबके खिलाफ कुछ सुगबुगाहट केरल में है। कुछ समय पहले महिलाएं जबरदस्ती नदी के उस घाट पर चली गई थी, जहां भगवान अयप्पा को सालाना स्नान के लिए लाया जाता है। महिलाओं को रोकने के लिए बल प्रयोग भी करने पड़े। पुरानी मान्य परंपराओं के के प्रति प्रतिरोध की भावना भांप कर कुछ बदलाव की शुरुआत भी हुई है। जैसे तिरुपति में भगवान को दलितों को घर ले जाने का अभियान पिछले दिनों चला। इसके लिए बताते हैं कि भगवान की मूर्तियों की प्रतिकृति बनाई गई और उसे दलित बस्तियों तक ले जाया गया। लेकिन हकीकतन यह भी प्रतीकात्मक ही है, इससे किसी वास्तविक बदलाव लाना है तो उसकी शुरुआत मंदिरों की वाहियात प्रथाओं और परंपराओं का ईश्वर की उपासना से कोई संबंध नहीं है। यह एक किस्म का पाखंड है, जिसकी निंदा होनी चाहिए। पढ़े-लिखे लोगों को इसका बहिष्कार करना चाहिए।

धार्मिक कर्मकांड और मंदिरों की प्रथाओं से बढ़ती असहिष्णुता का असर समाज पर दिखने लगा है। इससे सामाजिक विभाजन की खाई चौड़ी हो रही है, लोगों में हिंसक प्रवृत्तियां पैदा हो रही हैं, धर्म रक्षा के नाम पर सभी धर्मों के भीतर एक कट्टरपंथी समुदाय पैदा हो रहा है, जिनकी सारी सोच सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान, सच्चिदानंद की परिकल्पना के उलट है। यह असहिष्णुता एक अंधेरे रास्ते की तरह है, जिस पर चल कर हम कहीं नहीं पहुँचने वाले हैं। समाज में बढ़ रही हिंसा, अलगाव, विभाजन आदि को रोकना है तो धार्मिक असहिष्णुता को खत्म करना होगा।

www.thearyasamaj.org

देव दयानंद शरणं गच्छामि

-अभिमन्यु कुमार खुल्लर

ब्रह्मानंद, सच्चिदानंद के संसर्ग में मोक्षानंद रसपान करती हुई महर्षि दयानंद की आत्मा से सम्पर्क करते की मेरी अभिलाषा दिन व दिन बलवती होती गई। सम्पर्क करने का कोई उपाय न देखकर कम्प्यूटर का ध्यान आया। गूगल पर सब जानकारी मिल जाती है। पर वीडियो कान्फ्रेसिंग के लिये महर्षि दयानंद उपलब्ध नहीं हो सकेंगे। मैं तो उनसे आमने सामने बात करन चाहता हूँ। केवल उनसे ही। संकट में उन्हीं ने मुझे डाल रखा है।

कुछ समय परेशान रहा। अचानक मस्तिष्क ने सूचना दी कि कल्पनालोक में 'महर्षि दयानन्द' से बात की जा सकती है। क्षणभर में ही महर्षि और मैं आमने सामने। महर्षि से कहा आपने बड़े संकट में डाल दिया है ?

महर्षि ने कहा - कैसे ?

मैं- आपके बताये ईश्वर के उन्नीस गुण-तत्वों। मानदण्डों में से केवल दो गुणतत्वों-निराकार और सर्वव्यापक से मुझे सर्वाधिक आपत्ति है।

महर्षि- इन दो गुणों से ही क्यों ?

मैं- इन दो गुणों के कारण ही आप द्वारा समर्थित ईश्वर के लिये संभव हो पाया है कि वह इस पृथ्वी लोक में ही नहीं, अपितु अनंत ब्रह्माण्ड के कण-कण में समाया हुआ है।

महर्षि- ठीक-ठीक समझा तुमने।

मैं- आपका ईश्वर समस्त चेतन जगत् में, मानव/जीवात्मा के कर्मो का ही नियामक है, अन्य जीवों का नहीं। कर्म के अनुसारही पक्षपात रहित न्याय से फल-सुख-दुःख देता है। यह क्रम एक जन्म से दूसरे जन्म तक चलता रहता है। जब तक जीवात्मा मोक्ष को न प्राप्त कर लें। मोक्ष का रास्ता बड़ा कठिन-टेढ़ा है। आप यह भी मानते हैं कि ईश्वर की पूजा सर्वमान्य प्रचलित रूप में नहीं की जाती। उसकी स्तुति, प्रार्थना और उपासना की जानी चाहिये। यही नहीं, उसके गुण, कर्म और स्वभाव अपनाकर अपना चरित्र सुधारना चाहिये अन्यथा उसकी स्तुति, प्रार्थना और उपासना का कोई लाभ नहीं।

महर्षि- बहुत ठीक समझा तुमने।

मैं- बस, बहुत हो चुका। बहुत कठिन है आपके ईश्वर को साधना। मुझे आपका ईश्व स्वीकार नहीं।

महर्षि- फिर किसे ईश्वर मानोगे ?

मैं- किसी को भी। ब्रह्मा, विष्णु, शिव।

महर्षि- ठीक है। संस्कृत में 'धातु' से शब्दार्थ ग्रहण किया जाता है। अतः समस्त सृष्टि का निर्माण करने से 'ब्रह्मा' सर्वत्र व्यापक होने से 'विष्णु', कल्याण अर्थात् सुख देने वाला होने से उस परमात्मा को 'शिव' कहते हैं। ये तीनों विशेषण एक ही परमात्मा के हैं।

पुराण प्रतिपादित ब्रह्मा, विष्णु, शिव के ईश्वर परक अर्थ किये जाऐ तो तीन ईश्वर सिद्ध होते हैं जबकि ईश्वर एक ही है। ब्रह्मा की पूजा साधारणतया प्रचलन में नहीं है। पुष्कर-राजस्थान में उसका एक ही मंदिर है। शिव की पूजा नहीं होती। योनि आकार के पात्र में स्थापित शिवलिंग की पूजा होती है। क्या तुम शिवलिंग की पूजा ईश्वर मानकर करोगे ?

मैं- मेरा दिमाग घूम गया। चुप हो गया।

महर्षि- अधिकांशतः विष्णु की पूजा प्रचलन में नहीं है। उनके अवतारों की पूजा होती है। अवतार होने से ईश्वर 'अजन्मा' और 'अमर' नहीं हो सकता। सब जानते हैं अवतारों/महापुरुषों का जन्म हुआ ओर उनका स्वर्गवास भी हुआ। तुम उनके अवतारों की पूजा करोगे ?

मैं- हाँ।

महर्षि- उनकी इशारा समझ रहा हूँ। श्रीरम भगवान हैं, सीता माता हैं और दास भाव में सेवा करने वाले हनुमानजी हैं। इन तीनों की पूजा-अर्चना करूँगा।

महर्षि- क्या इनकी पूजा पृथक-पृथक ईश्वर मानकर करोगे या इनमें एक ही ईश्वर है, ऐसा मानकर करोगे।

मैं- जिसकी मूर्ति के सामने खड़े होकर पूजा करते हैं, उसी में ईश्वर भाव रखकर पूजा की जाती है।

महर्षि- भागवत् के माखन चुराने वाले, गोपियाँ के साथ रास-लीला करने वाले श्रीकृष्ण की भी तुम पूजा करोगे ?

मैं- श्रीकृष्ण की पूजा का सर्वाधिक प्रचलित रूप यही तो है।

महर्षि- यह तो विष्णु के दो अवतारों की बात हुई। अभी बाईस अवतार और हैं। पौराणिक ३३ करोड़ देवता मानते हैं। उनकी पूजा के लिये तुम्हें करोड़ो बार जन्म लेना पड़ेगा और मरना पड़ेगा।

मैं- आप डरा रहे हैं।

महर्षि- नहीं। मैं तो तुम्हारे ईश्वरों-देवताओं का परिचय करा रहा हूँ। अच्छा, यह बताओ कि इनमें से किसी एक ही ईश्वर की पूजा क्यों न करोगे ?

मैं- इसलिये कि यदि एक देवता प्रसन्न न हो तो दूसरा और दूसरा नही तो तीसरा ...... कोई न कोई तो पिंघलेगा। मेरा काम बज जाएगा।

महर्षि- क्या काम बन जाएगा ?

मैं- मुकद्दमा जीत जाऊँगा।

महर्षि- किससे मुकद्दमा जीत जाओगे ?

मैं- बड़े भाई से।

महर्षि- क्या दशरथ पुत्र भरत ने श्री रामचन्द्रजी के विरुद्ध मुकदमा जीत कर अयोध्या का राज्य प्राप्त किया था ?

मैं- चकरा गया। कोई उत्तर नहीं था। मौन साध गया।

महर्षि- इन देवी देवताओं के अतिरिक्त पुटट्पार्थी के साँई बाबा (अब स्वर्गवासी) शिरडी के साँई, आसाराम

शेष पेज १५ पर

वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में आर्य समाज का वेद-सम्बन्धी उत्तरदायित्व

-स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय के सुपुत्र **स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती** आर्य समाज के विद्वान् नेता एवं प्रतिष्ठित वैज्ञानिक थे। उनकी वैज्ञानिक योग्यता का एक उदाहरण यह है कि वे 'वर्ल्ड साइन्स कॉन्फ्रेन्स' के अध्यक्ष रहे हैं। उनकी लेखनी बड़ी बेबाक, मौलिक एवं सुलझी हुई थी। उनके द्वारा दिये गये विचार हमारे लिये आत्मचिन्तन के प्रेरक हैं। उनकी प्रत्येक बात पर सहमति हो- ये अनिवार्य नहीं है, परन्तु उनके विचार आर्य समाज की वर्तमान व भावी पीढ़ी को झकझोरने वाले हैं। -**सम्पादक**

१. आप सम्भवतया मेरे विचारों से सहमत न होंगे, यदि मैं कहूँ कि ऋषि दयानन्द के सपनों का आर्य समाज उस दिन मर गया, जिस दिन किन्हीं कारणों से स्वामी श्रद्धानन्द महात्मा गाँधी और काँग्रेस को छोड़कर महामना मालवीय-वादी हिन्दू महासभा के सक्रिय अंग बन गए। श्रद्धानन्द जी का गाँधी और कांग्रेस से अलग होना इतना दोष न था, पर हिन्दू महासभा की विचारधारा का पोषक हो जाना आर्यसमाज की मृत्यु थी। अगर सत्यार्थप्रकाश के ११ वें समुल्लास को फिर से ऋषि आज लिखते तो वे आज के आर्य समाज को भी हिन्दुओं का एक सम्प्रदाय मानकर इसकी गतिविधियों की उसी प्रकार आलोचना करते जिस प्रकार अन्य हिन्दू सम्प्रदायों की उन्होंने की है। इसमें से आज प्रायः सभी इस बात को स्वीकार करेंगे कि आर्य समाज आज हिन्दुओं के अनेक सम्प्रदायों में से एक सम्प्रदाय है, अर्थात् वह सम्प्रदाय जो वेद और यज्ञों के नारे पर जीवित हो।

२. शायद हिन्दुओं के अन्य सम्प्रदायों की अपेक्षा आज का आर्य समाज इन हिन्दुओं का वह सम्प्रदाय है, जो सबसे ज्यादा वेद की दुहाई देता है। यों तो तुलसीदासजी विष्णु के अवतार राम का चरित्र लिखने में पदे-पदे अगम-निगम की दुहाई देने में संकोच नहीं करते थे, पर आज का आर्य समाज वैदिक संहिताओं की अन्य हिन्दू सम्प्रदायों की अपेक्षा सबसे अधिक दुहाई देता है।

३. स्वामी दयानन्द से पूर्व के भारतीय पण्डितों ने वेद की आज तक रक्षा की, और लेखन-मुद्रण-प्रकाशन की सुविधा न होते हुए भी उन्होंने वैदिक संहिताओं के पाठों को सुरक्षित रखा। वैदिक साहित्य की यह सुरक्षा भारतीयों का बहुत बड़ा चमत्कार माना जाता है।

४. मैं कई वर्ष हुए (संन्यास से पूर्व) लंदन के ब्रिटिश म्यूजियम की सैर कर रहा था, म्यूजियम के पुस्तकालय कक्ष में मैंने बाइबिल पर एक अद्‌भुत व्याख्यान सुना-व्याख्याता महोदय की वार्ता का विषय था- .. वक्ता महोदय हम श्रोताओं को म्यूजियम के विविध कक्षों में ले गये। उन्होंने हमें बाइबिल को वे सुरक्षित प्रतियाँ साक्षात् करायीं जो तीसरी-चौथी-पाँचवीं सदी से लेकर १८वीं-११वीं सदी की हस्तलिखित या मुद्रित थीं।

तब से मेरी इच्छा रही है कि ऋग्वेद की भी वे हस्तलिखित प्रतियाँ देखूँ जो पुरानी हैं। आपको आश्चर्य होगा-भूमण्डल के साहित्यों में सबसे पुराना ऋग्वेद है, पर इसकी हस्तलिखित प्रीति शायद १३वीं-१४वीं शती से पूर्व की भी नहीं है। वेदों की हस्तलिखित प्रतियों पर मैं कभी फिर लिखूँगा पर निस्सन्देह, यह साहित्य आज तक सुरक्षित है, जो अनुक्रमणियाँ हमें प्राप्त हैं, वे बहुत पुरानी नहीं है। जैसे यजुर्वेद का सर्वानुक्रम सूत्र, शौनक का अनुवाकानुक्रमणी (ऋग्वेद की) या ऋक्-सर्वानुक्रमणी। शतपथ ब्राह्मण (१०/४/२/२३) में यहाँ तक उल्लेख है कि वेदों के समस्त अक्षरों की संख्या १२००० बृहती छन्दों की अक्षर संख्या के बराबर है अर्थात् १२००० बृहती छन्दों की अक्षर संख्या के बराबर है अर्थात् १२,०००×३६=४,३२,००० अक्षर। (सातवलेकरजी ने ऋग्वेद के अक्षरों की संख्या एक संस्करण में दी है। वह संख्या २,१४,२२१ है।)

५. जैसा मैं कह चुका हूँ, आज का आर्य समाज हिन्दुओं का ही वेदानुरागी सम्प्रदाय है। हिन्दुओं के अन्य सम्प्रदाय धीरे-धीरे अब वेद को छोड़ते जा रहे हैं या वेद से दूर जा रहे हैं। मेरे ऊपर शताधिकवर्षीय उदासी स्वामी गंगेश्‍रानन्दजी का स्नेह रहा है। उन्होंने चारों वेद संहिताओं को एक जिल्द में सुन्दर अक्षरों में छपाया है। यह पाठ की दृष्टि से निर्दोष माना जा सकता है। स्वामीजी भारत से बाहर भी द्वीपद्वीपान्तरों में इस 'वेद भगवान्' को ले गये हैं और वहाँ इसकी निष्ठापूर्वक प्रतिष्ठा की है। स्वामी जी को हिन्दुओं से एक ही शिकायत है। कोई हिन्दू अब वेद में रुचि नहीं लेता-जो व्यक्ति लेते प्रतीत होते हैं, वे प्रत्यक्ष या परोक्ष में आर्य समाज के हैं। सायण के दृष्टिकोण से पृथक् यदि किसी का कोई अन्य दृष्टिकोण है, तो वह आर्य समाज की विचारधारा से पोषित या प्रभावित है।

६. वेद जीवन का प्रेरणासोत है। ऋषि दयानन्द से पूर्व मध्यकालीन युग में (ऐतरेय, शतपथ आदि के काल में कात्यायन, याज्ञवल्क्य, महीधर, उव्वट आदि के काल में) वैदिक संहितायें केवल कर्मकाण्ड की प्रेरिका रह गयीं। उसका परिणाम वही हुआ, जो समस्त सम्प्रदायों में कर्मकाण्ड का हुआ करता है-विनाश और सर्वथा विनाश। कर्मकाण्डी व्यक्ति (नेता या पुरोहित) तो यही समझता रहता है कि धर्म की 'प्रतिष्ठा' उसके कर्मकाण्ड के कारण है, पर वस्तुतः कर्मकाण्ड के परोक्ष में जो विनाश का अंकुर है, वह पनपता आता है। श्रीपाद दामोदर सातवलेकर हिन्दू सम्प्रदाय के अन्तिम वेदानुरागी व्यक्ति थे (आदरणीय स्वामी गंगेश्‍वरानन्दजी का राग केवल मंत्रभाग से है, न कि व्यक्तिगत या समाजगत नवनिर्माण से।)

७. १८ वी. शती के प्रारम्भ से यूरोपीय विद्वानों ने वेद में रुचि ली और वैदिक साहित्य पर उनकी तपस्या सराहनीय है। (क) उन्होंने भारतवर्ष से इस साहित्य की हस्तलिखित प्रतियाँ उपलब्ध कीं और इन प्रतियों को अपने पुस्तकालयों में कुशलता से सुरक्षित रखा। (ख) यूरोपीय (बाद को अमरीकी) विद्वानों ने वैदिक व्याकरण, प्रातिशाख्य, वैदिक छन्द, वैदिक स्वरों का अच्छा अध्ययन किया, (ग) छोटे-छोटे संकलनों पर भी ये वर्षों अध्ययनशील

www.thearyasamaj.org

रहे, (घ) अध्ययन की एक नयी परम्परा को उन्होंने जन्म दिया, (ञ) अपने देश में इन सम्पादित ग्रन्थों को नागरी और रोमन लिपियों में अति शुद्ध छपवाने का भी प्रयत्न किया। उन्होंने (रॉथ-बण्टलिंक के ग्रन्थों के समान) बड़े-बड़े कोश तैयार किए, (च) अध्ययन की सुविधा के लिए अनेक प्रकार के तुलनात्मक विश्वकोश भी तैयार हुए।

८. धीरे-धीरे भारतवर्ष में भी पाश्चात्य परम्परा पर अध्ययन और अनुशीलन करने के कुछ केन्द्र खुल गए (शब्दानुक्रमणीय पर कार्य स्वामी नित्यानन्द और स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी ने प्रारम्भ किया)। इन केन्द्रों में सर विलियम जोन्स की एशियाटिक सोसायटी कलकत्ता, उसकी बम्बई वाली शाखा, गायकवाड़ संस्थान बड़ौदा, भाण्डारकर इन्स्टीट्यूट-पूना और विश्वबन्धु जी वाला विख्यात इन्स्टीट्यूट होशियारपुर और संस्कृत कॉलेज काशी ने भी अच्छा काम किया।

९. यह मैं पीछे कह चुका हूँ कि पुरानी परम्परा के हिन्दू विद्वान् वेद को छोड़ बैठे हैं और उनके हाथ से आर्य समाज के विद्वानों ने वेद को एक प्रकार से छीन लिया है। अतः ऐसी स्थिति में आर्य समाज की जनता का उत्तरंदायित्व वेद के सम्बन्ध में बढ़ गया है। मैंने एक बार सान्ताक्रूज की आर्य समाज में भी यह बात कही थी। यह उत्तरदायित्व निम्न दृष्टियों से महत्त्व का है -

१. मन्त्रों का उच्चारण
२. मन्त्रों का विनियोग
३. कर्मकाण्ड में मन्त्रों का प्रयोग
४. मन्त्रों के छोटे बड़े संकलन
५. मन्त्रों के भाष्य

पिछले वर्ष मैं नैरोबी गया था-मैंने वहाँ के आर्य समाज में स्पष्ट कहा था-दिल्ली की हवा से नैरोबी आर्य समाज को बचाओ। बम्बई की हवा से भी विदेशी आर्य समाजों को हमें बचाना होगा।

इन देशों में किसी से भी पूछो-तुमने यह अशुद्ध उच्चारण कहाँ सीखा-वे यह उत्तर देते हैं-हम दिल्ली या बम्बई गये थे-हमने वहाँ ऐसा ही देखा या सुना था। ओं भूर्बवः, ओजो अस्तु-यह तो दिल्ली और बम्बई की हवा के साधारण उदाहरण हैं।

कई स्थानों पर जब मैं स्वस्तिवाचन और शान्ति प्रकरण के टेप सुनता हूँ, उनको सुनकर यह स्पष्ट लगता है कि ये टेप मेरे ऐसे अज्ञ उपदेशकों या पंडितों के हैं, जिन्हें न ऋक् पाठ आता है न यजुः पाठ-साम के मन्त्रों का पाठ सामवेद का परिहास या उपहास है, जिसे आप किसी भी अवसर पर स्वस्तिवाचन (अग्न आ याहि वीतये) या शान्तिकरण (स नः पवस्व शं गवे) पाठ के अवसर पर सुन सकते हैं।

ऋषि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में स्पष्ट लिखा है कि ऋग्वेद के स्वरों का उच्चारण द्रुत अर्थात् शीघ्र वृत्ति में होता है। दूसरी-मध्यम वृत्ति, जैसे कि यजुर्वेद के स्वरों का उच्चारण ऋग्वेद के मन्त्रों से दूने काल में होता है। तीसरी विलम्बित वृत्ति है, जिसमें प्रथम वृत्ति से तिगुना काल लगता है, जैसा कि सामवेद के स्वरों के उच्चारण वा गान में, फिर इन्हीं तीनों वृत्तियों के मिलाने से अतर्ववेद का भी उच्चारण होता है, परन्तु इसका द्रुत वृत्ति में उच्चारण अधिक होता है।

मैंने दक्षिण भारत के पंडितों को ऋग्वेद का यथार्थ उच्चारण करते देखा है, किन्तु आर्य समाज के लोगों के उच्चारणों पर आप विश्वास नहीं कर सकते। उच्चारण या तो गुरुमुख से सीखे जा सकते हैं, या परिवार की परम्परा से।

आर्य समाज में नित्य नये विनियोग बनते जा रहे हैं। सबसे पुराना विनियोग शान्तिपाठ का है (द्यौः शान्तिः) 'त्र्यंबकं यजामहे' की भी बीमारी चल पड़ी है। मरने के बाद संस्कारविधि के प्रतिकूल शान्ति-यज्ञ चल गए हैं जिनमें शान्तिकरण के मन्त्र पढ़ना अनिवार्य सा हो गया है। प्रत्येक अग्निहोत्र का नाम यज्ञ पड़ गया है, जिसके बाद 'यज्ञरूप प्रभो' वाला भजन अवश्य गाना चाहिए। ऐसी नयी प्रथा चल पड़ी है। ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त (दशम मंडल, १९१ वाँ सूक्त) का नाम संगठन-सूक्त रख दिया गया है। ऋग्वेद के इस सूक्त के प्रथम मन्त्र का देवता अग्नि है। शेष तीन मन्त्रों का देवता 'संज्ञानम्' है। समाज के साप्ताहिक अधिवेशनों में संगठन सूक्त के नाम पर चारों मन्त्र पढ़े जाने लगे हैं। क्या हम संगठन सूक्त का नाम 'संज्ञान-सूक्त' नहीं रख सकते?

इस प्रसंग में संज्ञान-सूक्त मे केवल तीन ही मन्त्र हैं- (१) संगच्छध्वं (२) समानो मन्त्रः और (३) समानी व आकूतिः प्रथम मन्त्र संसमिद्युवसे. मन्त्र तो इस प्रसंग में पढ़ना ही नहीं चाहिये।

आगे के वेदप्रेमी हमारा अनुकरण करेंगे, अतः हमें सावधानी बरतनी चाहिए।

पेज १३ का शेश

और कबीर पंथी रामपाल (दोनों जेल में हैं; और उनकी जमानत भी नहीं हो रही।) इनकी भी पूजा ईश्व मानकर करोगे यदि तुम्हारी मनोकामना पूर्ण नहीं हुई तो!

मैं- अवश्य ही करनी पड़ेगी। मुझे अपनी मनोकामना पूर्ति से मतलब है, कोई भी करे।

महर्षि- कब्र में मृत अवस्था में पड़ा कोई पीर-फकीर भी?

महर्षि के इन प्रश्नों से मस्तिष्क में धुंधलका छाने लगा था। दिमाग गरम हो चला या. अन्दर ही अन्दर व्याकुलता बढ़ने लगी थी। इतने में ही महर्षि ने अगला प्रश्न दाग दिया-पता है पण्डे, पुजारी, महंत मनोकामना पूरी न होने पर क्या कहते हैं?

मैं- हाँ पता है। ज्यातिषियों के पास भेजते हैं जो ग्रह नक्षत्रों के विकट जाल में फंसा देते हैं। गृह-नक्षत्रों की बाधा पार करने के लिये व्रत, उपवास, पूजा आदि कराते हैं। जमकर दान-दक्षिणा लेते हैं। फिर भी यदि मनोकामना पूरी नहीं होती तो 'भाग्य' का लिखा बताते हैं।

महर्षि- इसके अतिरिक्त, परिवार में मृत्यु होने पर 'तेरही का भोज, गया (बिहार) में पिण्डदान, प्रतिवर्ष श्राद्ध आदि भी करना पड़ेगा।

अब तक मेरा धैर्य टूट चुका था।

मेरी मनोदशा को भाँप कर महर्षि ने कहा वत्स! सच्चे ईश्वर की खोज की कामना चौदह वर्ष की आयु में हुई। २१ वर्ष की आयु में गृहत्याग के पश्चात् चौदह वर्ष तक रात-दिन की सच्चे ईश्वर की खोज में, साधु संन्यासियों के पास समस्त भारत में भटकता रहा। तुम एक ही वार्तालाप में, थोड़े से उद्घाटन से ही घबरा गए। वेद सम्मत ईश्वर कोई उल्टी सीधी मनोकामना पूरी नहीं करता। मुकद्दमा नहीं जिताता। चोरी-चपाटी, अपहरण, बलात्कार, भ्रष्टाचार में सहायता नहीं करता है। सत्कर्म करने की ओंा करता है। ऐसे मानव की वह पूरी पूरी सहायता करता है। कष्ट पड़ने पर वह राह दिखाते है।

हे महर्षि! आपने सही कहा देव दयानंद शरणं गच्छामि।

www.thearyasamaj.org

'हिन्दू समाज का प्रमुख रोग जातिभेद'

सन्तराम, बी.ए. आर्यसमाज के उच्च कोटि के विचारक एवं जातिभेद विषय के अधिकारिक विद्वान थे। आप ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के भक्त होने के साथ स्वामी श्रद्धानन्द जी के भक्त व सहयोगी थे। आपने अनेक ग्रन्थ लिखे हैं जिनमें से एक 'हमारा समाज' नामक ग्रन्थ भी है। २८२ पृष्ठीय इस ग्रन्थ के तृतीय संस्करण का प्रकाशन सन् १९८७ में होशियारपुर के विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान ने किया है। इससे पूर्व सन् १९४८ व १९५७ में भी इस ग्रन्थ के दो संस्करण प्रकाशित हुए थे। इस पुस्तक को श्री सन्तराम जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को समर्पित किया है। समर्पण करते हुए उन्होंने जो शब्द लिखे हैं वह हैं 'अपने युग के सब से पहले और सब से बड़े जात- पांत-तोड़क महात्मा मुन्शीराम जी-स्वामी श्रद्धानन्द जी-की सेवा मेंकृसन्तराम'। इस पुस्तक के पृष्ठ ७ से एक पैरा प्रस्तुत कर रहे हैं जिसमें जाति भेद का उल्लेख करते हुए वह कुछ महत्वपूर्ण बातें लिखते हैं।

वह लिखते हैं कि '(आर्यों व हिन्दुओं में) फूट और उपद्रव का कारण उतना धर्म या संप्रदाय नहीं जितना कि जातिभेद है। सिख ब्राह्मण, पौराणिक ब्राह्मण, आर्यसमाजी ब्राह्मण और देवसमाजी ब्राह्मण विविध । धर्म-विश्वास रखते हुए भी एक दूसरे को आत्मीय समझते हैं, क्योंकि उनका परस्पर बेटी-व्यवहार (परिवारों के बीच विवाह सम्बन्ध) होता है। इसके विपरीत एक नाई आर्यसमाजी और दूसरा बनिया आर्यसमाजी ध र्म-विश्वास से एक होते हुए भी आपस में बन्धुभाव का अनुभव नहीं करते, क्योंकि जातिभेद के कारण उनका आपस में बेटी-व्यवहार (विवाह-सम्बन्ध) नही। यदि जाति-भेद का पचड़ा न हो तो घर में कुरान और मुहम्मद का मानने वाला भी उसी प्रकार मुहम्मदी हिन्दू रह सके जैसे मूर्तिपूजक, निराकारवादी, शैव और शाक्त आदि सब हिन्दू हैं। देखिए, अकबर से लेकर औरंगजेब वरन् बहादुरशाह तक किसी भी मुगल सम्राट् का खतना नहीं हुआ था। फिर भी वे मुसलमान कहलाते थे। मुगल वंश में यह अन्धविश्वास फैल रहा था कि खतना कराने से उनका राज्य नष्ट हो जाएगा। हुमायूं का खतना हुआ था, इसलिए उसे मारा-मारा फिरना पड़ा। मुगल-वंश में सबसे पहले बहादुरशाह के बड़े बेटे फखरुद्दीन का खतना हुआ था। इसके झट ही बाद सन् १८५७ के विद्रोह में बहादुरशाह पकड़ा जाकर रंगून भेज दिया गया। इसी प्रकार शोलापुर की साली, लिंगायत और विष्णोई आदि अनेक जातियां अपने शव जलाती नहीं, गाड़ती हैं। फिर भी वे हिन्दू हैं। भारत की राष्ट्रीय एकता में हिन्दू सभा और मुसलिम लीग जैसी साम्प्रदायिक संस्थाएं उतनी बाधक नहीं, जितनी कि ब्राह्मण सभा, जाट सभा, और अग्रवाल सभा जैसी जाति-बिरादरी की सभाएं बाधक हैं।'

यह दुःख की बात है कि हिन्दुओं व आर्यसमाज के विद्वान तथा नेता इस जातिभेद रूपी महारोग के उपचार के विषय में कभी विचार नहीं करते। यह महारोग हमारे देश व समाज में न केवल बना हुआ है अपितु बढ़ता भी जा रहा है जिसके अनेक दुष्परिणाम समाज के समाने हैं। ऋषि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इस रोग को दूर करने का प्रयास किया परन्तु वह पूर्ण सफल नहीं हुए। आज इस जातिभेद रूपी महारोग के उन्मूलन की हिन्दू और आर्य समाज को सर्वाधिक आवश्यकता है। मत व धर्म भेद के कारण भारत का विभाजन हुआ था तथापि वही समस्यायें आज भी उपस्थित हैं। जातिभेद के कारण देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद अनेक दलित व पिछड़ी जातियों को आरक्षण देना पड़ा। आज भी आरक्षण पर अनेक प्रकार के बयान आते रहते हैं जिससे समाज व देश कमजोर हो रहा है। पिछले दिनों हम हरयाणा व गुजरात के जातिगत आन्दोलनों को देख ही चुके हैं। यह व ऐसे अन्य आन्दोलन फिर कब अपना सिर उठा लें, किसी को पता नहीं। आर्यसमाज ने गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित जिस वैदिक वर्णव्यवस्था का प्रचार किया था उसे भी देश व समाज समझ नहीं सका और वह भी आज एक प्रकार से हाशिये पर पड़ी है। हमें लगता है कि वेद प्रचार ही देश व समाज की सब समस्याओं का कारगर उपाय है। इसी से सब मत-मतान्तर व जातिभेद समाप्त होगा और सत्य मानव धर्म प्रतिष्ठित होगा। आर्यसमाज को वेदाज्ञा और ऋषि आज्ञा "वेद प्रचार" पर ही स्वयं को केन्द्रित रखना चाहिये। यही विश्व में सच्ची मानवता स्थापित करने का एकमात्र उपाय है।

-मनमोहन कुमार आर्य,

ऋषि दयानंद की वेदार्थ को देन पर महात्मा हंसराज जी के स्तुत्य विचार'

महर्षि दयानन्द (१८२५-१८८३) ने अपने समय १८६३-१८८३ में देश व संसार के लोगों को वेदों के यथार्थ व सच्चे अर्थ बताये थे। उनके समय में देश के लोग वेदों के यथार्थ अर्थ नहीं जानते थे। इस कारण वह वेदों से कोई लाभ भी नहीं उठा सकते थे। वेदों के न जानने के कारण महाभारत काल के बाद लगभग २०० पीढ़िया वेदज्ञान उपलब्ध न होने के कारण ईश्वरोपासना व सच्चे मनुष्य जीवन का निर्वाह कैसे किया जाता है, को जानने व व्यतीत करने में विफल रहीं। महर्षि दयानन्द ने अपना जीवन अपने देश व संसार के लोगों के लिए तप व पुरुषार्थ पूर्वक विद्यार्जन कर उससे प्राप्त अमृतमय ज्ञान को हमें अपनी दया व प्रेम के कारण प्रदान किया है। हम व सारा संसार उनसे प्राप्त ज्ञान के लिए उनका ऋणी है। हमें वेद मार्ग पर चलना है और अन्यों को भी इस मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करना है। वेद और दर्शनों से ही हमें यह ज्ञान होता है कि हमारा यह जीवन धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की सिद्धि को प्राप्त करने के लिए हमें ईश्वर से मिला है। महात्मा हंसराज जी ऋषि दयानन्द के भक्त, पवित्र एवं परोपकारी आत्मा थे। आपने ऋषि दयानन्द और उनके दर्शन से प्रेरणा ग्रहण कर अपना सारा जीवन लोकोपकार वा संसार से अविद्या को दूर करने व समाज सेवा में समर्पित किया। आज इस संक्षिप्त लेख में हम 'वेदों के सच्चे अर्थ किसने बताए?' शीर्षक से लिखे उनके विचारों को प्रस्तुत कर रहे हैं।

महात्मा जी कहते हैं 'महर्षि वेद व्यास के पश्चात् ऋषि दयानन्द जी ही ऐसे महापुरुष हुए हैं, जिन्होंने वेदों के सच्चे अर्थ प्रकाशित करके लोगों को धर्म का मार्ग बताया। उनके शुभागमन से पूर्व लोग यह समझते थे कि वेदों में अग्नि, इन्द्र, वायु आदि जो नाम हैं, वे (ईश्वर से पृथक) विभिन्न देवताओं के हैं, परन्तु ऋषि दयानन्द ने प्राचीन ग्रन्थों (निरुक्त आदि) के प्रमाणों से सिद्ध कर दिया कि यद्यपि ये नाम भौतिक अर्थात् सांसारिक पदार्थों के भी हैं, परन्तु वास्तव में मुख्य रूप से परमात्मा के नाम हैं। महर्षि वेदव्यास ने अपने शारीरिक सूत्र (ग्रन्थ) में लिखा था कि प्राण एवं आकाश आदि नाम परमात्मा के भी नाम हैं। पण्डित महर्षि वेदव्यास के वचनों को पढ़ते थे, परन्तु जब वेदों में ये नाम आते थे तो उनके अर्थ भौतिक पदार्थ किंवा देवता विशेष करते थे। संस्कृतज्ञों के मस्तिष्क में यह विचार नहीं आता था कि इन शब्दों का अर्थ परमात्मा भी करना चाहिए।

यह ब्तमकपज (श्रेय) केवल ऋषि दयानन्द को ही जाता है कि उन्होंने इस प्रकार के शब्दों के पारमार्थिक (ईश्वर परक) अर्थ करके वेदों के वास्तविक अर्थों पर भी प्रकाश डाला। इस चाबी ने, जो ऋषि ने हमारे हाथों में दे दी है, ऊंचे-से-ऊंचा ज्ञान और विज्ञान वेदों का हमारे सम्मुख खोलकर रख दिया। हम बड़ी नम्रता और प्रेम से अपना शीष उस ऋषि के चरणों में निवाते हैं जिन्होंने वेदों के सम्बन्ध में यह प्रकाश हमें दिया है।'

महात्मा हंसराज जी ने अपनी उपर्युक्त पंक्तियों में ऋषि का सही मूल्याकंन किया है। महात्मा जी के जीवन की यह विशेषता है कि उन्होंने महर्षि दयानन्द जी के जीवन व उनके ग्रन्थों से प्रेरणा ग्रहण कर उनके प्रायः सभी सिद्धान्तों व शिक्षओं का अपने जीवन में निर्वाह किया था। वह एक प्रकार से जीवित शहीद थे जो एक दीपक की भांति तिल तिल कर जले थे और और अपने प्रकाश से देश व समाज को आलोकित और प्रकाशित किया। इसी के साथ इस संक्षिप्त लेख को विराम देते हैं।

-मनमोहन कुमार आर्य
पताः १६६ चुक्खूवाला-२
देहरादून-२४८००१
फोनः०६४१२६८५१२१

సమసమాజ ఉద్యమాల స్ఫూర్తి

-నరసింహ ప్రసాద్ గొర్రెపాటి

కులం కోసం ఒకడు కొట్లాడాదని కథలు కథలుగా చెప్పుకుంటారు. మతం కోసం మరొకడు నిలబడ్డాడని మంగళహారతులు పడతారు. మరి దేశం కోసం సరిగ్గా ఇదే రోజున ప్రాణాలిచ్చిన అమర వీరులు భగత్‌సింగ్, రాజ్‌గురు, సుఖ్‌దేవ్‌ల ఆశయమైన సమసమాజం కోసం పోరాడలేరా ?

ఇంక్విలాబ్ జిందాబాద్. అప్పట్లో అంతగా పరిచయం లేని మాట. కొందరు స్వతంత్రం కోసం ఉద్యమం చేసినా, కోరిక వెలిబుచ్చినా, అవి బ్రిటిష్ ప్రభుత్వంపై ధిక్కార తరహాలో ఉండేవి కావు. దశాబ్దాలు గడిచేవి. నినాదాలు మారేవి. ఉద్యమాలు వాయిదా పడేవి. ఎవరి కారణాలు వారికున్నా, యువతలో మాత్రం అసహనం పెరిగేది. సుదీర్ఘ రాజకీయ అనుభవంతో రాజకీయపు ఎత్తులతో తలపండిన మేధావుల ఆలోచనలు, సుదీర్ఘ ఉపన్యాసాలు, చర్చలు, స్వాతంత్ర్యంతోనే ఆగిపోయేవి కాని స్వాతంత్ర్యానంతరం భారతదేశం ఎలా ఉండాలి అని ఏనాడూ వారు ఆలోచించలేకపోయారు. స్వతంత్రం జన్మహక్కైనప్పుడు బ్రితమాలడం ఎందుకు ? అణచివేస్తుంటే అసహాయులమై చూడడమెందుకు ? ఆధిపత్యాన్ని అంగీకరించడమెందుకు ? ఎన్నో ప్రశ్నలు. ఎన్నెన్నో ప్రత్యామ్నాయం రాదా ? అనుకుంటున్న సమయంలో దేశంలోని వేర్వేరు ప్రాంతాల నుంచి సమరనాదం చేసి ఒకే వేదిక మీదకు వచ్చారు యువకిశోరాలు భగత్‌సింగ్, ఆజాద్, సుఖ్‌దేవ్, రాజ్‌గురు లాంటి వారు. ఒక సంస్థను ఏర్పాటు చేసి హిందుస్థాన్ సోషలిస్ట్ రిపబ్లిక్ అసోసియేషన్ అని పేర్కొన్నారు. అంతేగాక స్వాతంత్ర్యానంతరం భారత్ సోషలిస్ట్ దేశంగా ఉండాలని ఆకాంక్షించారు.

యువత ఆకాంక్షలకు ప్రతిరూపంగా సాహసానికి నిలువెత్తు ప్రతీకలుగా రగిలే అగ్నికణంలా బ్రిటిష్ ప్రభుత్వంపై సమరభేరి మోగించి వారు చేసిన రణ నినాదమే ఇంక్విలాబ్ జిందాబాద్. యువతంటే ప్రేక్షకుడుగా ఉండకూడదని, నిరాశావాదం కూడదని, సమకాలీన దురాగతాలపై ప్రశ్నించటం, తిరగబడటం, పోరాడటం యువత బాధ్యతని తెలియజేసారు. ఏళ్ళకేళ్లుగా సాగుతున్న నిరసన కార్యక్రమాల వల్ల నిలకడ లేని నిర్ణయాల వల్ల తమ అధికారానికి గాని ప్రాణాలకు గాని, తక్షణం వచ్చిన ముప్పేమీ లేదని వారిని ఏనాడూ శుత్రువులుగా పరిగణించని బ్రిటిష్ ప్రభుత్వం, సముద్ర ఘోషను తలపిస్తూ, తమ అరాచకాలను సవాల్ చేస్తూ, అణచివేతను ప్రతిఘటిస్తూ, దేశంలోని యువతను ఉత్తేజితులను చేస్తూ, సారూప్య భావాలున్న వారిని సంఘటితం చేస్తూ, ధిక్కార స్వరంతో విరుచుకు పడుతున్న యువ నాయకత్వాన్ని మాత్రం వెంటనే శత్రువుగా గుర్తించి బంధించి, చిత్రహింసల పాలుచేసింది. ఉపేక్షిస్తే ఉప్పెనలా ఉరికివస్తారని ఉరికొయ్యలు పేర్చి ఉసురు తీసి ఊపిరి పీల్చుకుంది. గుండెలు కరిగించే త్యాగాలు, అసామాన్యమైన సాహసాలు, తరతరాలకు స్ఫూర్తినిచ్చే ఆలోచనలు భగత్‌సింగ్ స్వంత్. ప్రతి నిత్యం పఠించి అతిశయోక్తులతో ప్రవచించే పురాణ కథల్లోని పాత్రలు సైతం శిఖర సమానమైన భగత్‌సింగ్ వ్యక్తిత్వం ముందు అల్పమే.

24 సంవత్సరాల వయస్సులో బ్రిటిష్ పాలకులు తీసింది భగత్‌సింగ్ ప్రాణం మాత్రమే. కాని తన ప్రాణం కన్నా మిన్నగా భావించిన భావజాలం, ఆనాటి ఆయన సమకాలీక నాయకుల్లో ఎవరికి అందనంత ఎత్తుకు చేరిన ఆలోచనలను ఆదర్శాలను విస్తృత స్థాయిలో తగినంతగా ప్రజలలోకి వెళ్ళనీయకుండా అడ్డుకట్ట వేసింది మాత్రం నాటి నాయకులు, నేటి పాలకులే. దాని ఫలితమే ఇప్పటి మన వికృత సమాజం.

1929లో అంటరానితనం సమస్య గురించి భగత్‌సింగ్ రాసిన వ్యాసంలో "మనం భారతీయులం. మన ఆధ్యాత్మిక సంపద గురించి గొప్పలు చెప్పుకుంటున్నాం. కాని ప్రతి మనిషి మనలాంటి వాడేనన్న విషయాన్ని విస్మరిస్తాం. కాని డబ్బు సంస్కృతి వంటబట్టిందని మనం చెడుగా చెప్పుకుంటున్న పశ్చిమ దేశాల వారు మాత్రం సమానత్వ సూత్రాన్ని గాఢంగా నమ్ముతున్నారు. మన దేవుళ్ళ గురించి, దేవతల గురించి అలుపు లేకుండా గొప్పలు చెప్పుకునే మనం మాత్రం అంటరాని వారిపై ఇంకా చర్చోపచర్చలు చేస్తున్నాం" అన్నారు. నాడు ఆయన ఆవేదన పడ్డ సమస్య నేటికి కొనసాగుతోంది అనడం ఆత్మవందనే అవుతుంది పెరుగుతోంది అనడం వాస్తవం. సమానత్వం లేని చోట ఏదీ లేనట్లే... అని ఈ మధ్య ఆత్మహత్య చేసుకున్న తమిళనాడు విద్యార్థి ముత్తుకృష్ణన్ చెప్పాడు. చాలా గొప్ప సత్యం. ఇంకొన్నాళ్ళ ముందే అసమానతలు, అవమానాలు, మానసిక వేధింపులు, హేళనలపై పోరాడి, శక్తి చాలక సెలవంటూ వెళ్ళిపోయిన రోహిత్ వేముల మరణించే ముందు చెప్పిందీ ఈ సత్యమే.

బ్రిటీష్ వారు స్వాతంత్ర్య ప్రకటన చేసే సమయంలో జరుగుతోంది అధికార మార్పిడి మాత్రమే అని చెప్పారు. దాన్ని నూటికి నూరు శాతం నిజం చేసే పనిలో పాలకులున్నారు. లాఠీలు విరుగుతూనే ఉన్నాయ్. తూటాలు పేలుతూనే ఉన్నాయ్. అణచివేతలు కొనసాగుతూనే ఉన్నాయ్. ఆక్రందనలు వినిపిస్తూనే ఉన్నాయ్. ప్రశ్నకు జవాబుగా హెచ్చరికలే వస్తున్నాయి.

సమానత్వం కోసం కొందరు పరితపిస్తుంటే అసమానతలే అసలైన భారతీయతని పరిహసిస్తున్నారు ఇంకొందరు. స్వేచ్ఛ కోసం బ్రతికే హక్కు కోసం కొందరు పోరాడుతుంటే కులాలవారి దోపిడీ హక్కుల కోసం ఆరాటపడే వారు ఇంకొందరు. అయిన వాళ్ళ శవాలను భుజాలమీద మోసుకెళ్తున్న అసహాయులోకవైపు, కనుచూపు మేరకే గాలి మోటార్లలో తిరగే పాలకులొకవైపు. కడుపునిండక కడతేరి పోతున్న బ్రతుకులొకవైపు, తవ్విన కొద్దీ వచ్చే కోటానుకోట్ల కుంభకోణాలింకొక వైపు. సాధించింది సర్వజన స్వతంత్రమా లేక కొందరి దోపిడీకి స్వతంత్రతా?

కులం కోసం ఒకడు కొట్లాడాదని కథలు కథలుగా చెప్పుకుంటారు. మతం కోసం మరొకడు నిలబడ్డాడని మంగళహారతులు పడతారు. మన ప్రాంతం కోసం పోరాడాడని పరవశించిపోతుంటారు. ముఠాల పోరులో మరణిస్తే మొనగాడని కీర్తిస్తారు. దేశ సంపద కొల్లగొట్టినోడు చస్తే ఆశయాలు సాధిస్తామని అరచి గోల చేస్తారు. మరి దేశం కోసం సరిగ్గా ఇదే రోజున ప్రాణాలిచ్చిన అమర వీరులు భగత్‌సింగ్, రాజ్‌గురు, సుఖ్‌దేవ్‌ల ఆశయమైన సమసమాజం కోసం పోరాడలేరా ?

(భగత్‌సింగ్, రాజ్‌గురు, సుఖ్‌దేవ్‌లను ఉరితీసి నేటికి 86 ఏళ్ళు)

www.thearyasamaj.org

పండిత్ నరేంద్రజీ - నిరంతర సమరశీలి

(పండిత్ నరేంద్రజీ పుట్టినరోజు శ్రీరామ నవమి)

-ఆచార్య అరవింద్ శాస్త్రి M.A. (Philosophy) హైదరాబాద్

పండిత్ నరేంద్రజీ గారి పేరు స్మరణకు రాగానే నా హృదయములో ఉల్లాసముతో నిండిన ఆశావహ తరంగాలు ఝుంకృతమవుతాయి. వీరు చూడటానికి ఎత్తులో చిన్నగా కనిపించే వారు. కాని ధైర్య సాహసములలో పర్వతము కంటే ఎత్తైనవారు. వారి సమీపమునకు వెళ్ళి వారితో సంభాషించే సౌభాగ్యము నాకెన్నోసార్లు కలిగినది. వారి క్రాంతికర భావములను వారి ఉపన్యాసముల మాధ్యమమున వినే అదృష్టము నాకు కలిగినది. వారి విప్లవాత్మక సందేశాలు నా జీవన గమనాన్ని నిర్దేశించుకోవడానికి ఎంతో దోహదపడినవి. పూర్వపు నిజాం రాజ్యములో వీరు "పండిత్‌జీ" పేరుతోనే లోక ప్రియులై యుండిరి. హైదరాబాద్ రాజ్యముక్తి ఉద్యమములో పాల్గొన్న ప్రతి వ్యక్తికీ పండిత్‌జీ త్యాగమయ జీవనము యొక్క పరిచయ ముండెను.

క్రీ.శ. 1907లో హైదరాబాద్ పాత నగరంలో గల శాలిబండ ప్రాంతములో శ్రీరామనవమి రోజున ఒక సంపన్న కాయస్త పరివారములో పండిత్‌జీ జన్మించారు. తన కిశోర అవస్థ నుండి మెల్లమెల్లగా ఆర్య సమాజ సత్సంగాలలో పాల్గొంటు తరువాత అనతి కాలములో నిష్ఠావంతుడైన కార్యకర్తగా,

తదుపరి ఆర్య జగత్తులో తిరుగులేని సమర యోధునిగా గుర్తింపుపొందారు.

వీరు జన్మించిన సమయమున సంపూర్ణ భారతదేశము బ్రిటీషు వారి పదఘట్టనల క్రింద నలిగిపోసాగినది. అప్పుడు హైదరాబాద్ రాజ్యములో ఒక విచిత్ర పరిస్థితి నెలకొన్నది. హైదరాబాద్ రాజ్యములో అల్ప సంఖ్యాకులగు (మొత్తం జనాభాలో కేవలము 12%) ముస్లిములకు ప్రతినిధియైన నిజాం, అధిక సంఖ్యాకులైన హిందువుల (మొత్తం జనాభాలో 88%) ఆశయాలకు, ఆకాంక్షలకు వ్యతిరేకముగా తన రాజ్యాధికారాన్ని కొనసాగించాడు. అంతేగాక అతడు బ్రిటీషు వారి చేతిలో కీలుబొమ్మ. ఆ విధంగా హైదరాబాద్ రాజ్యములో నివసించే బహుసంఖ్యాక హిందువులు ఒకే సమయములో బ్రిటీషు వారు మరియు నిజాంపాలకుల దౌర్జన్య పూరితమైన దమన చక్రము కింద నలిగిపోసాగిరి. ఈ భయంకర పరిస్థితులలో హిందువులు తమ్ము తాము దీనులుగా, అసహాయులుగా భావించసాగిరి. ఈ సంకట పరిస్థితులలో హిందు వులకు తమ జన్మ సిద్ధ అధికారములైన ధార్మిక, సామాజిక, ఆర్థిక మరియు రాజనైతిక హక్కులను పొందుటకు నిజాం సర్కారుతో పోరాడుటకు ఒక సంపూర్ణ త్యాగశీలి, ఓజస్వీ మరియు సమర్పిత వ్యక్తిత్వ రూపములో పం. నరేంద్రజీ నేతృత్వము వహించారు.

పం. నరేంద్రజీ ఆర్య సమాజ సిద్ధాంతాలను ఇంటింటా ప్రచారముచేసి హిందువులలో స్వాభిమానము మరియు స్వరాజ్య ప్రాప్తి భావనను జాగృత పరిచారు. వీరి క్రాంతికర ఉపన్యాసములను విన్న శ్రోతలు వీర రసములో ఓలలాడే వారు. భారతదేశపు ఉక్కు మనిషిగా సర్దార్ పటేల్ విఖ్యాతుడైతే, హైదరాబాద్ ఉక్కు మనిషిగా పం. నరేంద్రజీని

www.thearyasamaj.org

ప్రజలు కొనియాడ సాగారు. దినదినము పెరుగుతున్న వీరి లోకఖ్యాతి నిజాం మనసులో భయాన్ని రేపింది. దీనితో నిజాంకు నిద్ర కరువైంది. సాహసవంతుని ముందు నుండి స్వయముగా మృత్యువు కూడా పారిపోతుందనే నానుడి జగద్విదితము. తన తేజోవంతమైన ఉపన్యాసముల ద్వారా నిజామ్, అతని యొక్క తొత్తుల దుర్మార్గపు నిరంకుశ చర్యలను ఎండగడుతూ పం. నరేంద్రజీ హిందు నవయువకుల హృదయాలలో స్ఫూర్తిని రగిలించారు. ఆ విధంగా పండిత్‌జీ "నవయువక హృదయ సామ్రాట్" ఉపాధితో ప్రసిద్ధి చెందారు.

ఇక నిజాం సర్కారు ఒక అపాయకరమైన శత్రువుగా చూడసాగినది. తత్ఫలితంగా క్రీ.శ. 1938లో ముక్తి ఉద్యమంలో పాల్గొన్నందుకు అతనిని "హైదరాబాద్ అండమాన్" గా పిలువబడే మన్ననూర్ (మహబూబ్‌నగర్ జిల్లా)లో గల జైలు నందు 3 సం॥ల కఠిన కారాగార శిక్ష విధించి బంధించినారు. వీరు నిజాం ద్వారా రాజద్రోహిగా పేర్కొన్న బడ్డారు. ఇతని ఉపన్యాసాలపై సంపూర్ణ నిషేధము విధించబడినది. దీని తర్వాత క్రీ.శ. 1945 మరియు 1947లలో కూడా వీరిని కారాగార వాసానికి తరలించడం జరిగింది. ఈ విధంగా పం. నరేంద్రజీ గారు తన నిండు యవ్వనాన్ని దేశభక్తి రూప యజ్ఞములో ఆహుతి చేశారు. చివరకు 1948 సం॥లో సెప్టెంబర్ 17వ తేదీ నాడు నిజాం క్రూర శాసనము నుండి హైదరాబాద్ స్టేట్ విముక్తి చెందింది. తదనంతరము పండిత్ జీని చాలా గౌరవ పూర్వకముగా జైలు నుండి విడుదల చేయడము జరిగింది.

హైదరాబాద్ రాజ్యానికి స్వాతంత్ర్యము సిద్ధించిన సమయంలో జన జీవనము యొక్క ప్రతి క్షేత్రము అస్తవ్యస్తముగా నుండెను. సామాన్య జనుల కష్టాలు వర్ణనాతీతమై యుండెను. ప్రజలు నిరక్షరులు, దీన-హీనులై జీవితము గడుపు చుండిరి. సమాజము యొక్క ఈ దయనీయ స్థితిని చూసి ఇతర దిగ్గజ నాయకులతో పాటు నరేంద్రజీ యొక్క హృదయముకూడా చలించి పోయింది. అతనిది స్పందించకుండా ఉండే తత్వము కాదు గదా ! స్వరాజ్యమును సురాజ్యముగా మార్చాలనే పవిత్ర సంకల్పాన్ని మనస్సులో స్థిర పరచుకొని తిరిగి కార్య క్షేత్రములోకి అడుగుపెట్టాడు. పూర్వపు నిజాంరాజ్యము (నేటి తెలంగాణా ప్రాంతము + కర్ణాటక, మహారాష్ట్రలోని కొన్ని జిల్లాలు) లో అనేక ప్రాంతాలలో ఆర్య సమాజాలను స్థాపించారు. వాటిలో పాఠశాలలు, వ్యాయామశాలలు, గ్రంథాల యాల వ్యవస్థ చేశారు. పండిత్‌జీ స్వయముగా ఖాదీ ఉద్యమము, రాష్ట్రభాషా (హిందీ) రక్షా ఉద్యమము మొదలగు అనేక కార్యక్రమాలలో సక్రియభాగస్థులై ఉంటూ వచ్చారు. ముఖ్య హిందు జీవన ధార నుండి దూరమై దుర్భర జీవితము గడుపుచున్న కడు బీదలు, దళితులకు జీవనాధారము కల్పించారు. పండిత్‌జీ ద్వారా ప్రత్యక్షంగా సహాయంపొందినవారు అతనిని తలచుకొని ఉద్వేగానికి లోనై కంటతడిపెట్టిన వారిని కూడా నేను చుసాను.

పండిత్‌జీ యొక్క ఉద్బోధనలు చాలా ప్రేరణాప్రదంగా ఉండేవి. క్రీ.శ. 1975లో పం. నరేంద్రజీ సన్యాసాశ్రమములో ప్రవేశించి "స్వామీసోమానంద్" సరస్వతిగా మారారు. దీక్షా సమారోహము కేశవ మెమోరియల్ విద్యాలయము నారాయణగూడ, హైదరాబాద్‌లో జరిగినది. ఆ విశాల సభాసమారోహాన్ని తిలకించే అదృష్టము నాకు కలిగినది. సార్వదేశిక్ సభ నుండి కూడా ఎంతో మంది మూర్ధన్య విద్వాంసులు అందులో పాల్గొన్నారు. స్వామి సత్య ప్రకాశ్ సరస్వతి గారు పండిత్‌జీకి సన్యాస దీక్ష నొసంగినారు. ఆ సభలో తురీయాశ్రమము (సన్యాసాశ్రమము) చర్చ కొనసాగినది. మోక్షగాములు ఏషణాత్రయము (విత్తైషణ, పుత్రేషణ, లోకైషణ) లను త్రికరణముల (మనస్సు, వాక్కు, శరీరము)తో త్యాగము చేయాలని, అది అనివార్యము అనే విషయము యొక్క ఉద్బోధన చేయబడినది. అనే విషయము యొక్క ఉద్బోధన చేయ బడినది. అధ్యక్షీయ అభిభాషణకు పూర్వము పండిత్‌జీకి మాట్లాడే అవకాశము ఇవ్వబడినది. సభలో నిశబ్దమావరించినది. పండిత్‌జీ ఇప్పు స్వామి సోమానంద సరస్వతి రూపములో మాట్లాడడము ఆరంభించారు.

"అధ్యక్షమహోదయా ! ఆర్య భద్ర పురుషులారా ! ఈ సభలో ఏషణ (ఏషణ .. ఇచ్ఛ, కోరిక)లను పూర్తిగా మనస్సులో లేకుండా రూపుమాపాలనే విషయము చెప్పబడుచున్నది. కాని ఒక ఏషణ (కోరిక) నాలో తీవ్రమైన అగ్నిజ్వాలవలె రగులుచున్నది. అదేమనగా - నేను పరమాత్మని నిరంతరము ప్రార్థిస్తుంటాను. ఓ పరమాత్మా ! నాకు ముక్తి ప్రసాదించకు. ఇంకా ఈ భరతమాత గర్భంలో మళ్ళీ మళ్ళీ జన్మలెత్తి గురువర్యులు దయానందుల స్వప్నములను సాకారము చేయుటకు, "కృణ్వంతో విశ్వమార్యమ్" వేదోక్తిని సఫలము చేయుటకు, ఆర్య సమాజ రూపయజ్ఞ కుండములో నేనొక సమిధనై సమాజానికి ప్రకాశాన్ని ప్రదానము చేసే సామర్థ్యాన్ని నాకివ్వు. ప్రభువుతో ఇదే నా కోరిక" పండిత్‌జీ ఈ వాక్యాలు శ్రోతల మనస్సులను కదిలించి వేసినవి. సభికులందరూ చాలా సేపటి వరకు తమ కరతాళ ధ్వనుల ద్వారా పండిత్‌జీ యొక్క ఉద్వేగభరిత భావాలను ప్రశంసిస్తూ, జయజయ ధ్వనులతో స్పందించారు.

ఈ విధంగా జీవితము యొక్క అంతిమ శ్వాస వరకు తన జీవిత లక్ష్యాలకు సంభందించిన నిర్ణయములలో స్పష్టముగా, స్థిరముగా ఉండి అదే విధంగా జీవించారు. నిజామ్ శాసన కాలములో మూడు సార్లు కారాగారములో బంధించిన సమయములో వారిని తీవ్రమైన శారీరిక చిత్రహింసలకు గురి చేయడము జరిగినది. ఒకసారి పోలీసుల లాఠీచార్జిలో ఒక కాలు విరిగిపోయినది. జీవితము యొక్క చివరిదశలో శారీరికశక్తి క్షీణించ సాగినది. అయినా తన అనారోగ్యాన్ని లెక్క చేయకుండా దినము-రాత్రి ఆర్య సమాజ ఐక్యత, ఉన్నతి కొరకు ప్రతిక్షణము ప్రయత్న శీలురై యుండిరి. చివరకు పండిత్ నరేంద్రజీ తన 69వ ఏట 24 సెప్టెంబర్ 1976 సం॥లో పరమపదించారు.

పం. నరేంద్రజీ జీవిత చరిత్ర ప్రస్తావన లేకుండా హైదరాబాద్ ముక్తి ఉద్యమ ఇతిహాసము మరియు ఆర్య సమాజ ఇతి హాసము సంపూర్ణము కాజాలవు. ఈ పునీత ధరిత్రి వినీలాకాశములో పం. నరేంద్రజీ ధృవతారవలె సదాప్రకాశిస్తూ ఉంటారు.

వారికి మా శతసహస్ర వందనాలు.

వేదోద్ధారకుడు మహర్షి దయానందుడు

-ఆచార్య మసనచెన్నప్ప

వేదోద్ధారకుడుగా పేరుగాంచిన మహర్షి దయానందుడు క్రీ.శ. 1824లో గుజరాతు రాష్ట్రంలోని టంకారాలో 'ఔదీచ్య' బ్రాహ్మణ కుటుంబంలో జన్మించినాడు. తండ్రి కర్షన్‌జీ మౌర్వీ రాజ్యంలో గొప్ప భూస్వామి. దయానందుని మొదటి పేరు 'మూలశంకరుడు'

కర్షన్‌జీ మూలశంకరునికి 5వ ఏటనే దేవనాగరి అక్షరాలు నేర్పించి, ఆ తర్వాత 8వ ఏట ఉపనయన సంస్కారం కావించినాడు. మూల శంకరుడు తన 14 ఏండ్ల లోపలనే యజుర్వేదాన్ని కంఠస్థం చేసినాడు. తల్లిదండ్రులు శివపూజలు చేసేవారు. శివరాత్రి నాటి జాగరరణమే మూలశంకరుని జ్ఞానోదయానికి కారణమైంది. ఎలుక పిల్ల ఆగడాన్ని అరికట్టలేని శివలింగం దేవుడెట్లా అవుతాడనే ప్రశ్న అతనిలో ఉద్భవించింది. అప్పటి నుంచి, సృష్టికర్త ఎవరు ? జడ చేతనాలకు గల భేద మేమిటి ? జీవిత లక్ష్యమేమిటి ? అనే అక్కడ ఒక పండితుడు భోజనానికి పిలిచి తన యింటిలో మాంసం వండుతుండగా చూసి "మీరు మాంస భక్షకులు, మాకు తినుటకిది యోగ్యం కాదు" అని చెప్పి వెనక్కి వచ్చినాడు. కాని అతని వల్లనే తంత్ర గ్రంథాలు లభించినాయి. వాటిలోని విషయాలన్నీ భ్రష్టాచారాలకు సంబంధించిన వని దయానందునికి అప్పటిదాకా తెలియదు. వాటిలో మద్యం, మాంసం, మత్స్యాలు, ముద్రలు, మైధునం అనే పంచమకారాలు అనుభవిస్తే మోక్షం లభిస్తుందని రాయబడిన విషయాలు దయానందునికి దుఃఖాన్ని కల్గించినాయి.

దయానందుడు వెళ్లిన చోటల్లా పండితులను, సాధువులను, యోగులను కలుసుకొని వారితో ముచ్చటించనాడు. వారు చెప్పే విషయాలలో గల సత్యాసత్యాలను అన్వేషించినాడు. కొందరు మఠాధిపతులు దయానందున్ని తమ శిష్యునిగా చేసుకోవడానికి ప్రయత్నించి విఫలమైనారు.

"నీవేమి తెలుసుకోగోరుతున్నావు?" అని ఒక మఠానికి చెందిన మహంతు అడుగగా "నేను సత్యమైన యోగవిద్యను, మోక్షాన్ని కోరుకుంటున్నాను. మోక్షం అనేది ఆత్మపవిత్రత, సత్యం, న్యాయాచరణం లేక దొరుకదు. ఈ ప్రయోజనం కలిగే దాకా నా దేశవాసులకు ఉపకారం చేయడమే నాపని" అని సమాధానం ఇచ్చినాడు.

ఒకసారి నదిలో కొట్టుకొని పోతున్న శవాన్ని ఒడ్డుకు చేర్చి, కత్తితో కోసి, గ్రంథాలలో చెప్పినట్లు షట్చక్రాలను చూడలేక, హఠప్రదీపిక, యోగబీజం మొదలైన తన దగ్గరున్న గ్రంథాలను చించి గంగలో పారవేశాడు. వేదాలను, ఉపనిషత్తులను, కపిలుని సాంఖ్య శాస్త్రాన్ని, పతంజలి యోగశాస్త్రాన్ని మాత్రమే ప్రమాణాలుగా స్వీకరించనాడు.

మరొక సారి, ఒక స్త్రీ చనిపోయిన తన బాలుని శవాన్ని గంగానదిలో విడుస్తూ, శవానికి చుట్టిన బట్టను తిరిగి తీసుకొన్నది. అంతేకాక దాన్ని ఉతికి ఆరవేసి తీసుకొని ఏడుస్తూ ఇంటిదారి పట్టింది. దయానందుని మనస్సును ఈ దృశ్యం ఎంతగానో కలచివేసింది. "ఈ దేశపు దారిద్ర్యానికి ఇంతకంటె దృష్టాంతం ఇంకేమి కావాలి?" అని ఆవేదనకు గురైన దయానందుడు బీదజనుల భాషలోనే, వారి దుఃఖాలను పోగొట్టడానికి తగిన ప్రచారం చేస్తానని ప్రతినపూనినాడు.

దయానందుని జీవితంలో అపూర్వ సంఘటన ఏదైనా ఉందంటే, అది దండి విరజానందుడు గురువుగా లభించడమే. దయానందుడు మూడేళ్లలో వ్యాకరణశాస్త్రాన్ని క్షుణ్ణంగా అభ్యసించినాడు. నేత్రహీనుడైనప్పటికీ విరజానందుడతనికి వేదాలపట్ల, ఆర్షగ్రంథాలపట్ల అభిరుచిని కల్గించినాడు. మొదట దయానందుడు విరజానందుని కుటీరానికి వచ్చి తలుపు తట్టగా అతడు 'నీవెవరు?' అని అడిగినాడు. దానికి దయానందుడు నేనెవరినో తెలుసుకోవడానికే సముఖానికి వచ్చినాను" అని వినమ్రంగా సమాధానమిచ్చినాడు. దానితో విరజానందుడు నీ దగ్గర ఉన్న అనార్ష గ్రంతాలనన్నింటిని గంగలో పారవేసిరమ్మనగా స్వామి అట్లే చేసినాడు.

వేదధర్మ ప్రచారం కోసం దయానందుడు 1875లో బొంబాయి నగరంలో 'ఆర్య సమాజం' స్థాపించినాడు. ఈ సమాజంలో చేరేవారు పదినియమాలను పాటించాలని సూచించనాడు.

1. సమస్త సత్య విద్యలకు, సర్వ పదార్థాలకు ఆదిమూలం పరమేశ్వరుడు.
2. పరమేశ్వరుడు సచ్చిదానంద స్వరూపుడు, నిరాకారుడు, సర్వశక్తిమంతుడు, న్యాయకారి, సర్వాంతర్యామి, సృష్టికర్త. అతనినే ఉపాసించాలి.
3. వేదం సత్య విద్యల గ్రంథం కనుక దానిని చదువుట, చదివించుట, వినుట, వినిపించుట మనకందరికి పరమధర్మం.
4. సత్యాన్ని గ్రహించడానికి, అసత్యాన్ని త్యజించడానికి సిద్ధంగా ఉండాలి.
5. అన్ని పనులు ధర్మానుసారం చేయాలి.
6. ప్రపంచానికి ఉపకారం చేయడం ఈ

www.thearyasamaj.org

సమాజ ముఖ్యోద్దేశం. అనగా శరీరం, ఆత్మ, సమాజం ఈ మూడింటి ఉన్నతికి పాటుపడాలి.

7. అందరితో ప్రేమపూర్వకంగా, ధర్మాను సారంగా వ్యవహరించాలి.

8. అవిద్యను తొలగించి విద్యను పెంపొందించాలి.

9. తన ఉన్నతిలోనే తృప్తిపడక, అందరి ఉన్నతిలో తన ఉన్నతి ఉందని భావించాలి.

10. సమాజానికి మేలుచేసే నియమాలను పాలించడంలో పరతంత్రులై, వ్యక్తిగతంగా మేలు చేసే నియమాలలో స్వతంత్రులై ఉండాలి.

వేదానికి 'సరస్వతి' అనిపేరు. వేదజ్ఞానాన్ని ఔపోశన పట్టిన నాడు కనుక 'దయానంద సరస్వతి' అనే పేరు సార్థకమైంది. 'ఋగ్వేదాది భాష్యభూమిక'తో పాటు యజుర్వేద భాష్యం రచించడం వల్ల ఆయన 'మహర్షి' అయ్యాడు. శాస్త్రార్థములలో ఎంతో మంది పౌరాణిక పండితులను ఓడించి వేద ధర్మమే గొప్పదని చాటినాడు కనుక 'స్వామి' అయ్యాడు. భారతీయ సమాజంలోని మూఢాచారాల నెన్నింటినో ఖండించి, సదాచారాలను చూపినాడు కనుక 'సంస్కర్త' అయ్యాడు.

అన్ని ధర్మాలకు మూలం వేదమే అని దయానందుని విశ్వాసం. అందుకే వేదాన్ని అన్నివేళల ప్రమాణంగా తీసుకోవాలని ప్రబోధించినాడు. వేదాలలో విగ్రహారాధన లేదని, జడపూజలు చేయరాదని మొదట చెప్పినవాడు దయానందుడే.

భారతీయ సమాజంలోని అవిద్యను రూపుమాపి, విద్యాప్రకాశాన్ని అందించిన మహాపురుషుడాయన. అంటరానితనం వేదవిరుద్ధమని, స్త్రీలు, శూద్రులు, ఎవరైనా వేదాన్ని చదువవచ్చునని సప్రమాణంగా నిరూపించిన దార్శనికుడు ఆయన.

చనిపోయిన తర్వాత చేయదగిన కర్మలుండ వని, 'తర్పణం' అంటే తృప్తిపరచడం, 'శ్రాద్ధం' అంటే శ్రద్ధతో కూడిన సపర్య అని, ఇవి బ్రతికి ఉన్నవారికి సంబంధించినవనని ఎలుగెత్తి చాటినాడు. స్త్రీ విద్యకు ప్రాధాన్యం ఇచ్చి, బాలికలకు ప్రత్యేకంగా గురుకుల విద్యాల యాలుండాలని చెప్పినవాడు దయానందుడే.

మతంకంటె ధర్మం గొప్పదని, మతం మనిషి అభిప్రాయమైతే, ధర్మం సర్వమానవాళికి సంబంధించిందని గుర్తించిన పరమ ధార్మికుడాయన.

అన్యతంత్ర భారతాన్ని చూసి కంటతడిపెట్టిన దయానందుడు, భారతదేశ పూర్వవైభవం గొప్పదని, మనది చక్రవర్తి రాజ్యమని చాటినాడు. సర్వజీవులకు దేవుడొక్కడేనని, మూర్తి పూజలు తగవని, ఫలితజోస్యం నమ్మరాదని, కర్మఫలాలను ఇచ్చేవాడు ఒక్కదేవుడేనని ప్రబోధించినాడు.

విగ్రహారాధనను, అస్పృశ్యతను, బాల్య వివాహాలను, కర్మకాండను, కుల భేదాలను మూఢాచారులుగా లెక్కించి, వాటిని తొలగించి సమాజాన్ని నవ్యపథంలో నడిపించాలనుకున్న యుగ పురుషుడు దయానందుడే.

మతంకంటె ధర్మానికి ప్రాధాన్యం ఇచ్చినవాడు కనుకనే దయానందుడు హిందూ మతాన్ని పీడిస్తున్న మూఢాచారాలను ఖండించినాడు. స్వరాజ్యమంటే ఆయన దృష్టిలో కేవలం మనం పాలించుకునే రాజ్యం కాదు, ఎల్లరకు సుఖసంతోషాలను కల్గించే రాజ్యం ! స్త్రీ జాతి సముద్ధరణతో పాటు, మనుష్యత్వానికి ప్రాధాన్యమిచ్చిన మానవతామూర్తి ఆయన.

దేశస్వాతంత్ర్య సముపార్జనలో ఆర్య సమాజం నిర్వహించిన పాత్ర ఆయన తపః ఫలమే. దేశీమతకు, జాతీయతకు, సంస్కృతికి, సమానత్వానికి స్వామిదయానందుని బోధనలు ప్రాణం పోసినాయి.

ఆయన మూఢాచారాలను ఖండించవచ్చు, పౌరాణికులనెదిరించ వచ్చు, అద్వైతాది సిద్ధాంతాలను, అన్యమత గ్రంథాలను పరిశీలించి, అందులోని సత్యాసత్యాలను గ్రహించి సత్యార్థ ప్రకాశంలో చూపవచ్చు. కాని ఆయనవలె వేదంపట్ల, సనాతన ధర్మం పట్ల ప్రగాఢమైన విశ్వాసం చూపిన వారు లేరు.

ప్రపంచానికుపకారమొనర్చడమే ఆర్య సమాజ నియమమని చెప్పడం వల్ల ఆయన విశ్వ జనీన దృష్టిగలవాడని తెలుస్తుంది.

అట్టడుగున ఉన్నవారు కూడా సముద్ధరింప బడవలెనని, అవిద్య నుంచి విద్యవైపు నడవాలని, మృత్యువు నుంచి అమృతత్వాన్ని పొందాలని దయానందుడు ఆశించినాడు.

"ఎవ్వరును ఉద్యమించకుండా ఉండరాదు" అనే ఋగ్వేత (2-37-3) వాక్యాన్ని మనకందించిన మహర్షి సామాన్యుడు కాడు. సర్వజనుల అభ్యుదయాన్ని కోరిన మహా పురుషుడు. మహర్షిదయానందుని ఆలోచనలు, ఆచారాలు, వేషభాషలు అన్నీ దేశీయమైనవే. అందుకే ఆయనను రాజులు, మహారాజులు, పీఠాధిపతులు ఎంతగానో గౌరవించాడు.

స్వామి దయానందుడు వేదాల ఆధారంగా త్రైత సిద్ధాంతాన్ని ప్రతిపాదించినాడు. దాని ప్రకారం సృష్టిలో ఉన్నవి మూడు తత్త్వాలే. మొదటిది పరమేశ్వర తత్వం. రెండవది జీవాత్మతత్త్వం. మూడవది ప్రకృతి తత్త్వం.

స్వామి దయానందుడు ఈ సిద్ధాంతాన్ని ఆధారంగా చేసుకొని బుద్ధుని శూన్యవాదాన్ని, శంకరుని మాయావాదాన్ని ఖండించినాడు. సంప్రదాయాల పేరుతో చెలామణి అవుతున్న వాదాలనెన్నింటినో పరిశీలించి, 'సత్యార్థ ప్రకాశం'లో వాటి బాగోగులను పొందు పరిచినాడు.

అహంకారాన్ని వీడిచి ఓంకారాన్ని ఆశ్రయించుమని చెప్పిన దయానందునిలో ఒక పూర్ణమానవుడు కనిపిస్తాడు. ఆయన దయాసాగరుడు, త్యాగ, వైరాగ్య విరాజరుడు, శ్రద్ధాభక్తి ప్రపూర్ణుడు. తార్కికుడు, జ్ఞాన సంపూర్ణుడు. ఆయన హృదయం ప్రేమోప కారాలకు నిలయం, సమయోచిత బుద్ధికి ఆలయం, దయకు సహానుభూతికి ఆశ్రయం, ఓజస్సుకు, తేజస్సుకు స్థానం. సామాజిక రుగ్మతలకు, భవరోగానికి వైదిక చికిత్సను అందించిన ఆర్ష వైద్యుడు మనం ఆ మహర్షి బాటలో నడిచి, భారతదేశ పూర్వ వైభవాన్ని పునః ప్రతిష్ఠితం చేద్దాం.

మహర్షిదయానందుని పుట్టినరోజు
ఆచార్య మసనచెన్నప్ప
సందర్భం - 21.02.2017 9885654381
(మాఘబహుళ దశమి)

www.thearyasamaj.org

मंथन

बुधवार, 22 मार्च, 2017 | 8

ताकतवर सत्ता पक्ष के साथ ही विपक्ष का भी शक्तिशाली और सकारात्मक होना गणतंत्र की कामयाबी के लिए आवश्यक शर्त है

समूचे विपक्ष की एकजुटता आज की जरूरत

राजनीति

प्रभात कुमार रॉय

उत्तर प्रदेश को प्रायः हिन्दुस्तान का हृदय कह जाता है। क्या वास्तव में भारतीय जनता पार्टी ने वस्तुतः हिंदुस्तान का हृदय जीत लिया है? वक्त की पुरजोर मांग है कि भारतीय गणतंत्र को अत्यंत शक्तिशाली और गौरवमय बनाने के लिए प्रबल सत्ता पक्ष का कड़ा मुकाबला करने के लिए विपक्ष में भी कोई शक्तिशाली नेतृत्व राष्ट्र के समक्ष आए, क्योंकि वर्तमान राजनीति में विपक्ष का नेतृत्व करने वाले लीडर तो नरेंद्र मोदी के समक्ष धराशाही हो गए हैं। ताकतवर सत्ता पक्ष के साथ ही विपक्ष का भी शक्तिशाली और सकारात्मक होना भारतीय गणतंत्र की वास्तविक कामयाबी के लिए अति आवश्यक शर्त है। दुर्भाग्यवश विपक्ष की पांतों में नरेंद्र मोदी के मुकाबले में अखिल भारतीय छवि रखने वाला कोई विपक्षी राजनेता नजर नहीं आ रहा है। भाजापा हुकूमत की प्रलापी आलोचना से अब विपक्ष को बहुत उपर उठना चाहिए और भारतीय जनमानस के समक्ष सकारात्मक विकल्प पेश करना चाहिए। विपक्ष द्वारा राज्यसभा में नकारात्मक किरदार अदा करने का भी दुष्परिणाम विपक्ष को चुनाव में भुगतना पड़ा है। भारत के पांच प्रांतों में सम्पन्न हुए विधानसभा चुनाव में विपक्ष द्वारा नरेंद्र मोदी की व्यक्तिगत आलोचना को ही अपना प्रमुख अस्त्र बनाया। अतः चुनाव पटल पर विपक्ष न तो कोई वैकल्पिक विचारों को पेश कर पाया और न ही वैकल्पिक राजनीतिक एजेंडे को पेश कर सका। ऐसी विकट राजनीतिक परिस्थिति के तहत भद्दे और ओछे किस्म के परस्पर आरोप -प्रत्यारोपों और जुमलेबाजी में संपूर्ण चुनाव उलझकर रह गया।

विपक्ष की यही मनःस्थिति और रणनीति यदि भविष्य में भी कायम बनी रही तो भाजापा के लिए आगे का मार्ग निष्कंटक हो जाएगा। राष्ट्र के विहंगम पटल पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस आज भी प्रमुख विपक्षी दल है। अतः विपक्ष की राजनीतिक रणनीति सुनिश्चित करने का दायित्व भी कांग्रेस पर ही मुख्यतः निर्भर है। कांग्रेस की बदहाली का हाल यह हो चुका है कि पंजाब प्रांत में शानदार फतह हासिल कने के बावजूद वह भारत के मात्र दस प्रतिशत भू-भाग पर शासन करने तक सिमट कर रह गई है। उत्तर भारत में पंजाब और दक्षिण भारत में कर्नाटक प्रांत पर कांग्रेस की हुकूमत कायम है। अतः भारत के केवल दो बड़े प्रांतों में कांग्रेस सत्तासीन है, जबकि भाजपा ने भारत के केंद्र के साथ ही साथ भारत के पंद्रह प्रांतों में अपनी हुकूमत कायम कर दिखाई है। क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के प्रति जनमानस का मोहभंग हो चला है। बिहार के चुनाव से जो प्रबल उम्मीद क्षेत्रीय दलों के मध्य जागृत हुई थी, वह उम्मीद उत्तर प्रदेश और पंजाब में धराशाही हो गई, जहां कि क्षेत्रीय दलों सपा, बसपा और आप को मतदाताओं ने बुरी तरह ठुकरा दिया है।

पांच प्रांतों के चुनाव परिणामों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नैतिक और राजनैतिक शक्ति में यकीनन अतिशय वृद्धि कर दी है। नरेंद्र मोदी के चाहने वाले तो भाजपा की विजय को नरेंद्र मोदी की व्यक्तिगत विजय करार दे रहे हैं। यहां तक उत्तर प्रदेश में प्राप्त हुई आश्चर्यजनक कामयाबी को वर्ष 2019 में आयोजित होने वाले लोकसभा चुनाव का ट्रेलर कहा जा रहा है। उत्तर प्रदेश के अतिरिक्त भारत के चार अन्य प्रांतों में भी चुनाव सम्पन्न हुए, किंतु उत्तराखंड को छोड़ कर बाकी तीन प्रांतों में भाजपा को वैसी शानदार कामयाबी प्राप्त नहीं हुई जैसी भाजपा की चाहत रही। पंजाब प्रांत में तो अकाली-भाजपा गंठबंधन की तकरीबन वही दुर्गति हुई, जैसी कि उत्तर प्रदेश में सपा और कांग्रेस के गंठबंधन की हुई। पंजाब में कांग्रेस दो तिहाई बहुमत हासिल करने में कामयाब रही। इसके साथ ही मणिपुर और गोवा में वह सबसे बड़ा राजनीतिक दल बन कर उभरी लेकिन विडम्बना रही कि दोनों प्रांतों की विधानसभा में सबसे बड़ा राजनीतिक दल होने के बावजूद कांग्रेस विपक्ष में बैठने को विवश है। भाजपा ने दावा पेश किया कि इन दोनों प्रांतों में उसे बहुमत प्राप्त है लेकिन गणतांत्रिक परंपरा का संवैधानिक तकाजा था कि राज्यपाल इन दोनों प्रांतों में पहले कांग्रेस को हुकूमत तशकील करने का मौका फराहम कराते।

भविष्य में विपक्ष को कड़ी अग्निपरीक्षा से गुजरना है और यदि उस अग्निपरीक्षा में विपक्ष को जलकर खाक नहीं हो जाना है तो फिर सोने की तरह दमकना और चमकना होगा। भाजपा की नकारात्मक

आलोचना का परित्याग करके केवल सकारात्मक आलोचना का प्रश्रय लेना होगा। विपक्ष को अपनी वैचारिक और संगठनात्मक कमियों को तिरोहित करने की खातिर आत्म-आलोचना में प्रखर बनाना होगा। बिहार की तर्ज पर सिद्धांतविहीन गठबंधन करके राष्ट्रीय पटल पर विपक्ष वस्तुतः भाजपा का मुकाबला भी नहीं कर सकेगा और फिर भाजपा को शिकस्त देना तो बहुत दूर की कौड़ी सिद्ध होगी।

विपक्ष की सैद्धांतिक राजनीति और उज्जवल छवि ही भविष्य में उसके लिए कोई कामयाबी का मार्ग प्रशस्त कर सकती है। परिवारवादी डॉयनेस्टी ने कांग्रेस की राजनातिक नैया को डूबा दिया है और जब तक कांग्रेस डॉयनेस्टी संस्कृति से मुक्त नही होगी और जंग-ए-आजादी के दौर के अपने विस्मृत संस्कारों को पुनर्जीवित नहीं कर लेगी तब तक कांग्रेस का कोई मुस्तकबिल नही है। सामंतवादी संस्कृति को ढोती हुई, कांग्रेस पार्टी आखिरकार गणतांत्रिक चेतना से ओतःप्रोत होते चले जाते भारत में कैसे अपना अस्तित्व बरकरार बनाए रख सकेगी। सामंतवादी जातिवाद को प्रश्रय प्रदान करने वाले और साम्प्रदायिकता की पालकी ढोने वाले कथित समाजवादियों का भारत में क्या कोई भविष्य शेष है अभी से कोई क्या जानेगा? दलित आंदोलन की प्रबल चेतना को समाजवादी अवधारणा के साथ एकाकार करने के स्थान पर इसे जातिवादी और साम्प्रदायिक मौकापरस्ती के साथ सम्बद्ध करने के प्रयास ने बहन मायावती की राजनीति को धूल चटा दी है। अब बहन मायावती अपनी अपमानजनक शिकस्त की गहन विवेचना करने स्थान पर अपनी पराजय की तोहमत को ईवीएम मशीनों की गड़बड़ी पर थोप रही है। राष्ट्रीय दल के तौर पर साम्यवादी दलों को अस्तित्व का संकट उत्पन्न हो गया है। बंगाल के हाथों से निकल जाने की विकट पीड़ा से विकल साम्यवादी दल राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में कोई राजनीतिक मार्ग तलाश नही कर पा रहे हैं।

केरल और त्रिपुरा की प्रांतीय सत्ताओं तक सिमट चुके साम्यवादी दल, जब तक बीसवीं सदी की स्टालिनवादी मानसिकता से निजात पाकर 21 वीं सदी में लोकतांत्रिक समाजवाद के महान आदर्शों को अंगीकार नहीं करेंगे तब तक भारत की धरा पर मुख्य धारा का राजनीतिक दल कदापि नहीं बन सकेंगें। भाजपा ने भी स्वयं को बुनियादी तौर पर बहुत कुछ बदलकर और आर्थिक विकास को अपना सैद्धांतिक और रणनीतिक सम्बल बनाकर उत्तर प्रदेश के दिल को जीता है। विपक्ष को भी स्वयं को पूर्णतः परिवर्तित करना होगा और सकारात्मक तौर पर सशक्त विपक्ष की भूमिका निभाते हुए भविष्य में शक्तिशाली बनना होगा ताकि सत्त पक्ष मदान्ध होकर सत्तामद में झूमने न लगे और भारतीय गणतंत्र कहीं कुछ कमजोर न पड़ जाए।

भाजपा ने भी स्वयं को बुनियादी तौर पर बहुत कुछ बदलकर और आर्थिक विकास को अपना सैद्धांतिक और रणनीतिक सम्बल बनाकर उत्तर प्रदेश के दिल को जीता है। विपक्ष को भी स्वयं को पूर्णतः परिवर्तित करना होगा और सकारात्मक तौर पर सशक्त विपक्ष की भूमिका निभाते हुए भविष्य में शक्तिशाली बनना होगा।

लेखक सुरक्षा परिषद में सलाहकार रह चुके हैं
सम्पर्क- 9319310533

www.thearyasamaj.org

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month

आर्य जीवन 03-04-2017 Registered-Reg. No. HD/783/2015-17 RNI.No.52990/93

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Editor Vithal Rao Arya, M.Sc. LL.B., Sahityaratna
Arya Prathinidhi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-95.
Phone No. 040-24753827, 66758707, Fax: 040-24557946
Annual subscription Rs. 250/- సంపాదకులు - విఠల్‌రావు ఆర్య, ప్రధాన్ సభ

To,

హేవలంబి నూతన సంవత్సర ఉగాది సందర్భమున వేద పండితులలో ఆర్య సమాజ విద్వాంసుడైన శ్రీ మట్టి కృష్ణారెడ్డిని రాష్ట్ర ప్రభుత్వం వైపున సన్మానిస్తున్న రాష్ట్ర ముఖ్యమంత్రి శ్రీ కే. చంద్రశేఖర రావు గారు. ఈ సందర్భమున కృష్ణా రెడ్డి గారు నాల్గు వేదాల సంహితయైన వేదభగవాన్‌ను ముఖ్యమంత్రి గారికి అందచేస్తున్న దృశ్యం. మధ్యలో కేంద్ర మంత్రి శ్రీ బండారు దత్తాత్రేయ గారు

आर्य समाज स्थापना दिवस पर सभा में यज्ञ करते हुए अधिकारीगण

आर्य समाज स्थापना दिवस एवं उगादि के अवसर पर आर्य समाज महबूबनगर के प्रधान डॉ. भारद्वाज नारायण राव

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR
Editor Vithal Rao Arya • aryapratinidhisabhaaptelangana@gmail.com, acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691

సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్‌రావు ఆర్య, ప్రధాన్, ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాదు-95. Ph: 040-24753827, 66758707

संपादकः श्री विट्ठलराव आर्य प्रधान सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रेस चिक्कडपल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया ।
प्रकाशकः आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद तेलंगाना-95.